MANAVA BHARATI
INTERNATIONAL SCHOOL, PATNA
AFFILIATED TO CBSE, NEW DELHI

शब्दों की ज़ुबानी

हमारी कविता - हमारी कहानी

भाग-2

कक्षा: 7 से 10

शब्दों की ज़ुबानी

हमारी कविता - हमारी कहानी

(असंपादित)

भाग—2

कक्षाः 7 से 10

MANAVA BHARATI INTERNATIONAL SCHOOL

Patna (Bihar, India)

CONTENTS

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
1.	मित्रता	Kaustubh, 7‘A’	8-8
2.	मित्रता	Swapnil Sinha, 7‘A’	9-9
3.	जंगल का राजा	अनिकेश राज, 7‘A’	10-10
4.	पढ़ाई का दीपक	सानविका कौशिक, 7‘A’	11-11
5.	माता–पिता का महत्व	तन्ज्जुम परवीन, 7‘A’	12-12
6.	कलम	धान्या, 7‘A’	13-13
7.	कड़वा सच	राजनंदिनी, 7‘A’	14-14
8.	प्यारी माँ	Kaustubh, 7‘A’	15-15
9.	मेरी कविता, मेरी कहानी	Vatsalya Mehta, 7‘A’	16-16
10.	मेरी कविता, मेरी कहानी	Apporvanand Jha, 7‘A’	17-18
11.	लड़ाई	Swapnil Singh, 7‘A’	19-19
12.	मेरी कहानी	Anshika Singh, 7‘A’	20-21
13.	बचपन	आद्या उमा, 7‘A’	22-22
14.	मेरी कहानी	मान्या शर्मा, 7‘A’	23-24
15.	लड़के	Karan Kumar, 7‘A’	25-25
16.	चिड़ियाँ	Adya Ara, 7‘A’	26-26
17.	एक बच्चा!	Ankit Pandey, 7‘A’	27-27
18.	मेरी कविता, मेरी कहानी	शाश्वत, 7‘A’	28-28
19.	शब्दों की जुबानी (कविता)	Sneha Suman, 7‘A’	29-29
20.	मेरी कविता, मेरी कहानी	Smita Singh, 7‘A’	30-30
21.	मेरी कविता, मेरी कहानी	Syed Zyan Faisal, 7‘A’	31-31
22.	दो बैलों की कथा	नव्या रस्तोगी, 7‘A’	32-33
23.	मेरी अधूरी कहानी	युवराज सिंह यादव, 7‘B’	34-34
24.	हमारी कविता, हमारी कहानी	Aarushi Kashyap, 7‘B’	35-36
25.	रोहन और उसका दोस्त	आदित्य राज गुप्ता, 7‘B’	37-38
26.	बहरे की कहानी	नव्या सिन्हा, 7‘B’	39-40
27.	विजयानगर का घोड़ा	Vagisha Kumar, 7‘B’	41-42

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
28.	हमारी कविता, हमारी कहानी	अलकमा हमजा, 7‘B’	43-43
29.	गली का हीरो कुत्ता	Sanghvi Gupta, 7‘B’	44-44
30.	शब्दों की जुबानी	7‘B’	45-45
31.	बदलती दुनिया	प्रियम रवि, 7‘B’	46-46
32.	घर में भूत	आदर्श मिश्रा, 7‘B’	47-47
33.	हमारी कविता, हमारी कहानी	Hammad Afaque, 7‘B’	48-49
34.	छठ पूजा	Priyanshu Kumar, 7‘B’	50-50
35.	चिन्टू और उसका गिफ्ट	Harshit Kumar, 7‘B’	51-52
36.	एक भुतिया चोर की कहानी	Md. Shayan Jamal, 7‘B’	53-54
37.	एक शतरंज खिलाड़ी	प्रणव मिश्रा, 7‘B’	55-56
38.	मेरे प्यारे गली के कुत्ते	जोया, 7‘B’	57-57
39.	हमारी कहानी	Lakshita, 7‘B’	58-58
40.	राजा की लापरवाही	रूद्र आनंद, 8‘A’	59-59
41.	दोस्त बने अनजान	Aditya Singh, 8‘A’	60-60
42.	हमारी कविता, हमारी कहानी	Navya Srivastava, 8‘A’	61-61
43.	एक सितारा सबसे प्यारा	Rudresh, 8‘A’	62-62
44.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता हमारी कहानी	देव शर्मा, 8‘A’	63-63
45.	यादें डाँटों की	नव्या कुमारी, 8‘A’	64-64
46.	मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है	Afreen Khan, 8‘A’	65-66
47.	जैसी करनी, वैसी भरनी	आदित्य अंश, 8‘A’	67-68
48.	बूढ़ी पृथ्वी का दुःख	Anushka Kumari, 8‘A’	69-69
49.	यह कैसे होगा?	कोमल कुमारी दांगी, 8‘B’	70-71
50.	आगे बढ़ो	संस्कृति गुप्ता, 8‘B’	72-72
51.	संगति का असर	ऐश्वर्या गौरव, 8‘B’	73-73
52.	महँगाई की समस्या	Ragad, 8‘B’	74-74
53.	पानी का महत्व	Anshika Kumari, 8‘B’	75-75
54.	माही	अक्षिता दिवाकर, 8‘B’	76-76
55.	पढ़ाई की इच्छा	तनिष्का मिश्रा, 8‘B’	77-77
56.	अंत	Ayaan Khalid, 8‘B’	78-78

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
57.	लड़का–लड़की एक समान	अंशिका राज, 8‘B’	79-79
58.	पानी	Eurqan, 8‘B’	80-80
59.	मेरी सुंदर प्रकृति	Md. Al hamza Ejaj Mallick, 8‘B’	81-81
60.	हमेशा लोगों की मदद करना चाहिए	Ankush Raj, 8‘B’	82-82
61.	सपने	तलत परवीन, 8‘B’	83-83
62.	प्रकृति की सुंदरता	आरोही, 8‘B’	84-84
63.	प्रकृति की माया	Dakshina, 8‘B’	85-85
64.	नियमों का पालन करें	मन्नत राज, 8‘B’	86-86
65.	मेहनत करो, लेकिन समझदारी से	राज दाँगी, 8‘B’	87-88
66.	मेहनत नहीं करो, स्मार्ट काम करो	8‘B’	89-89
67.	मेरी कविता	Piyush Bharti, 8‘B’	90-90
68.	दोस्त या दुश्मन	Risha Kumari, 8‘B’	91-92
69.	पायल का सपना	Disha Sharma, 8‘B’	93-93
70.	सफलता	तनुज राज, 8‘G’	94-96
71.	ईश्वर के दर्शन	आर्यन राज, 8‘G’	97-99
72.	स्कूल के दिन	Harshit Krishan Raj, 8‘G’	100-100
73.	लुप्त हो गई लड़कियाँ	संस्कार आर्या, 8‘G’	101-103
74.	राजा का घमंड	Pratyush Raj, 8‘G’	104-105
75.	एक नई सुबह का आरंभ	Ayush Raj, 8‘G’	106-107
76.	बच्चों की प्यारी माँ	उमर हुसैन, 8‘G’	108-108
77.	कर्म का फल	जितेश कुमार सिन्हा, 8‘G’	109-110
78.	डटकर चल	Shashank Kumar, 8‘G’	111-111
79.	हमारा पर्यावरण	Arushi Kumari, 8‘G’	112-113
80.	श्रवण कुमार की कहानी	Pallavi Kumari, 8‘G’	114-115
81.	अनोखी मित्रता	रिधिमा सिंह, 8‘G’	116-116
82.	क्रिकेट की जिंदगी	Sarthak Dixit, 8‘G’	117-117
83.	खरगोश का बच्चा	Md. Farhan Raza, 9‘A’	118-118
84.	समय का महत्व	राजवत, 9‘A’	119-120
85.	नए स्कूल का पहला दिन	निकेश कुमार, 9‘A’	121-122

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
86.	पटना जू की कहानी	भावेश कुमार, 9‘A’	123-123
87.	जल का महत्व	देवांश कुमार, 9‘A’	124-124
88.	लालच की सीख	आयशा, 9‘A’	125-126
89.	मेरी सोच	श्रेया सिंह, 9‘A’	127-128
90.	एक अंजान बूढ़ा आदमी	हिब्बा फैज खान, 9‘A’	129-131
91.	क्या सबी डॉक्टर बन पाएगी?	Aditi Anand, 9‘A’	132-133
92.	जीवन	Srishti Kumari, 9‘A’	134-134
93.	किसी पर आँख बंद करके भरोसा नहीं करना चाहिए	अंकिता राज, 9‘A’	135-136
94.	दिखावटी दुनिया	आर्यन कुमार, 9‘A’	137-138
95.	भविष्य से आई लड़की	Shamellah Shamim, 9‘A’	139-140
96.	हीरे का हार	Hafeez Jamal, 9‘A’	141-142
97.	तुम कब जाओगे अतिथि	Noya Imam, 9‘A’	143-143
98.	गूँज उठी वाद्य यंत्रों की आवाज	Rishav, 9‘A’	144-145
99.	संगत का असर	आलोक कुमार, 9‘B’	146-147
100.	समाज	अंजली शर्मा, 9‘B’	148-149
101.	सपनों की शक्ति	Nikhil Kumar, 9‘B’	150-150
102.	माँ का प्यार	अक्षरम् शर्मा, 10‘A’	151-152
103.	जिंदगी में जिंदा	Nilansh Arya, 10‘A’	153-153
104.	चोर ने चुराई ईमानदारी	Syed Aban Faishal, 10‘A’	154-155
105.	क्रिकेट की शुरुआत	Mrigendra Kumar Singh, 10‘A’	156-157
106.	लालच क्यों करना?	Jiya Sinha, 10‘A’	158-160
107.	बर्फ और आग	Dipti Kumari, 10‘A’	161-162
108.	दोस्त!	Ahana Akhtar, 10‘A’	163-163
109.	जिंदगी एक सफर	रजिया प्रवीण, 10‘A’	164-164
110.	गरीबों का बड़ा दिल	सौम्या सिन्हा, 10‘A’	165-166
111.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता, हमारी कहानी	Arsh Khan, 10‘A’	167-169
112.	दो भाईयों की कथा	Nadir Khan, 10‘A’	170-171

Sr. No.	Title	Writer/Author	Page No.
113.	इंसानियत	Jai Kishan, 10‘A’	172-173
114.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता, हमारी कहानी	Yagya Srivastava, 10‘A’	174-174
115.	बेरोजगारी	Lucky Raj, 10‘B’	175-176
116.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता, हमारी कहानी	Ayanur Rahman, 10‘A’	177-178
117.	मन की चाह	अंशिका आर्य, 10‘A’	179-180
118.	क्या कभी सोचा?	श्रेया हनी प्रीयल, 10‘A’	181-182
119.	अनजान लड़की से परम मित्र का सफर	सुभाना परवीन, 10‘A’	183-184
120.	शास्वती साम्राज्य का गिरना	Avik Kumar, 10‘A’	185-186
121.	संघर्ष वास्तविकता में क्या है?	Aarava Sinha, 10‘A’	187-189
122.	जो होता है, अच्छे के लिए होता है	सृष्टि स्नेहल, 9‘A’	190-191
123.	सांसारिक जीवन	Rashmi Kumari, 10‘A’	192-193
124.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता, हमारी कहानी	शालिनी कुमारी, 10‘A’	194-195
125.	लेखक की नजर	ग्रेसी सिंह, 10‘A’	196-198
126.	मनुष्य	Amriti Singh, 10‘A’	199-200
127.	परिश्रम की सफलता की कुँजी है	अनमोल रतन, 10‘A’	201-203
128.	परिश्रम का फल	मुक्ता राज, 10‘A’	204-205
129.	शब्दों की जुबानीः हमारी कविता, हमारी कहानी	Jannat Fatma, 10‘A’	206-208
130.	वक्त तुम्हें सबस हासिल कर दिखलाएगा	सृष्टि, 10‘B’	209-209
131.	अमावस्या की रात	Vidhushi, 10‘B’	210-212
132.	कहानी एक यादगार सफर की	Preet, 10‘B’	213-214
133.	इंसान की कीमत	10‘B’	215-216
134.	चूहा और बिल्ली	दिव्यांशी सिन्हा, 10‘B’	217-218
135.	स्त्री की कठिनाईयाँ	Priya Nandini, 10‘B’	219-220
136.	असफल प्रेमकथा	महिमा सिंह, 10‘B’	221-222
137.	आज धुआँ–धुआँ है हर जगह	Anjali Raj, 10‘B’	223-223
138.	नन्हीं–सी लाडली	कहकशां, 10‘B’	224-224

प्राक्कथन

बच्चों के सर्वांगीण विकास में लेखन कला का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके द्वारा बच्चों की भाषा को कुशल और समृद्ध किया जा सकता है । कक्षा 1 से 9 तक के बाल लेखकों द्वारा लिखी गई कहानी और कविताओं का दूसरा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है। बच्चों के रचनात्मक कल्पना की उड़ानों का यह जीता–जागता प्रमाण है, जिसके माध्यम से बच्चे अपनी भाषा कौशल को प्रदर्शित कर रहे हैं।

यह पुस्तक महत्वपूर्ण है, क्योंकि कहानियाँ और कविताएँ जो बच्चों ने लिखीं हैं वह उनके शब्दों में हैं तथा संपादन रहित है। संपादन नहीं करने का निर्णय बाल लेखकों को अपनी कल्पनाशीलता के उड़ान में मदद करेगा। उन्हें स्वतंत्रता और स्वच्छंद अवसर प्रदान करेगा, जिससे वे अपने काल्पनिक उड़ान को पंख दे सकें। अपनी लिखी और प्रकाशित कहानी पढ़ने और पढ़ाने का आनंद ही अलग होता है; इससे बच्चों में स्व का बोध होता है जो उनके सर्वांगीण विकास व गर्व की भावना के लिए महत्वपूर्ण है और प्रेरणा का श्रोत भी है। इस रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता को गढ़ने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

यह आत्म–अभिव्यक्ति का एक माध्यम है जो बाल लेखकों को प्रोत्साहित करता है। अपने विचारों को शब्द में पिरोने के लिए जहाँ विचार प्रबल होगा वहाँ लेखनी को बल मिलेगा, जो बच्चों को प्रेरित करेगा अपने विचारों को कलमबद्ध करने के लिए। यह प्रयास लेखकों को अपनी भाषा की शुद्धता और शब्दों की गंभीरता को समझने में मदद करेगा।

बच्चों के लिखने के इस प्रयास में माता–पिता की भूमिका तथा शिक्षकों का सहयोग महत्वपूर्ण है। इसके लिए आप सभी को बधाई! आपका यह प्रयास लेखकों के आत्म–अभिव्यक्ति को पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अनुपम मिश्र
प्राचार्य

मित्रता

Kaustubh 7-Alpha

दोस्त मेरा सबसे सच्चा,
उसके जैसा कोई और न अच्छा।

उसके साथ मैं पढ़ता हूँ,
उसी से मैं झगड़ता हूँ।

दोस्त मेरा सबसे सच्चा,
उसके जैसा कोई और न अच्छा।

वह करता है अपनी मनमानी,
पर दूर करता मेरी हर एक परेशानी।

दोस्त मेरा सबसे सच्चा।
उसके जैसा कोई और न अच्छा।

'मित्रता'

Swapnil Sinha, VIII α

अनुज और विकास दो दोस्त थे। अनुज ने अपनी परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं किया था इसलिए उदास था विकास ने अनुज को समझाया और उसकी कमजोरियों को दूर करने में मदद की।

विकास ने अनुज को पढ़ाई में मदद कि और उसे आत्मविश्वास दिलाया। अनुज ने विकास कि मदद से अपनी कमजोरियों को दूर कर लिया और अगली परीक्षा में अच्छा ~~प्रदर्शन~~ प्रदर्शन किया।

अनुज ने विकास को धन्यवाद दिया और कहा ~~कि~~ कि तुम्हारी दोस्ती ने मुझे जिवन में आगे बढ़ने का साहस दिया है। विकास ने कहा कि दोस्ती में यही होता है, हम एक दूसरे का साथ देते हैं और एक दूसरे का मदद करते हैं।

जंगल का राजा।

अनिकेश राज, 7-A

एक जंगल में एक शेर रहता था, वो किसी भी जानवर से नहीं डरता था, चाहे वो बाघ हो या हाथी। उसका नाम मुफ़ासा था, वह शेर जब तक जिया एक सच्चा शेर बनकर जिया, जब वह जंगल में शिकार करता, तो उसके हाथों से कोई बच नहीं पाता। वह किसी और के वजह से नहीं खुद के बदौलत इतना नाम कमाया था। उससे सिर्फ़ वो नहीं डरते थे जो उस जंगल में रहते थे, उससे आस-पास के जितने जंगल थे, उसमें रहने वाले सभी जानवर डरते थे। वो अपने पुरी ज़िंदगी में किसी से नहीं डरा। वो जब मरा तो वो किसी जानवर के वजह से नहीं, बलकि वो बहुत बूढ़ा हो चुका था, मगर फिर भी, कोई भी जवान शेर उससे डर के मारे लड़ते नहीं थे वो अपने बुढ़ापे से मरा। उसने अपने जिनदगी में 200 से ज्यादा शेरों को मारा था। पुरी दुनिया उसे मुफ़ासा के नाम से बुलाती थी।

पढ़ाई का दीपक

मानविका कौशीक - VII 'A'

"पढ़ाई है दिपक, अज्ञान का अंत,
जिससे जगमगा हो हर एक संत।
किताबे है जैसे ज्ञान किधारा,
हर शब्द कहे "सपनों को संजो दो प्यारा"

रातों की नींदें, सुबह कि ठंडी हवा,
सब कुछ कुर्बान, जब हो आगे बढ़ने किदवा।
मुश्किलें आएँ, थकान भी सताए,
पर मेहनत ही जो मंज़िल दिखाए।

कभी सवाल भारी, कभी उत्तर कम,
पर जिज्ञासा रखो, ना बनो तुम गुमशुदा गम।
अभ्यास है चाबी, लगन है ताला,
खुलेगा वही दरवाज़ा, जो सच्चाई से संभाला।

माँ-बाप कि आशा, गुरुओं कि सीख,
सब मिलते हैं जब हो पढ़ाई कि रेख।
तो चलो उठो, कलम को थामो,
ज्ञान के सूरज को अपने संग लाओ।

माता, पिता का महत्व

तन्ज्जुम परवीन, सात अल्फ़ा

किसी गाँव में एक गरीब परिवार रहता था। मुश्किल से उन्हें दो वक्त कि रोटी नसीब होती थी। वे पूरे तीन लोग थे। एक माँ, एक पिता और एक बच्चा, जिसका नाम समीर था। एक बार उसी गाँव में मेला लगा हुआ था। समीर को बहुत मन था उस मेले में जाने का, पर उनके पास पैसे न थे। तभी माँ ने बोला कि क्यों न हम मेले को बस देखने जाएँ और वहाँ थोड़े भी पैसे खर्च न करें? बच्चे और उसके पिता को यह विचार अच्छा लगा। वे सभी खुशी-खुशी मेले में चल गए, पर वहाँ ~~इतनी~~ इतनी आकर्षक चीज़ें थीं कि बच्चे का दिल उन पर आ गया और वह माँ से ज़िद करने लगा खिलौनों के लिए। माँ ने समीर को ज़ोर से डाँटा। समीर गुस्सा हो गया और एक उड़ती हुई तितली के पीछे भागने लगा। कुछ देर भागने के बाद उसे एहसास हुआ कि वह गुम हो चुका है। उधर माँ रो रही थी और इधर समीर। समीर को तब एहसास हुआ कि सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जो इस दुनिया में हैं वह सिर्फ़ माता और पिता हैं। उसने किसी भले इंसान से मदद माँगी और उस इंसान ने समीर को उसकी माँ तक पहुँचाने में मदद करी। बच्चा रोते हुए अपनी माँ के सीने से आ लगा और कहा, "माँ मुझे माफ़ कर दो आज मुझे पता चला कि माँ, बाप से बढ़कर इस दुनिया में और कुछ भी नहीं।"

कलम

धान्या - 7 Alpha

लिखने के कागज़ पर अक्षर की छाप,
कलम लिखती है चलते हैं हाथ,
कहीं सीधी, कहीं टेढ़ी, कहीं हल्की
कहीं गाढ़ी
हर हाथ का अपना है अंदाज़,
भाषा, अलग, स्थान अलग, अलग ही स्याही
लिखने में जो काम आए वो है कलम,

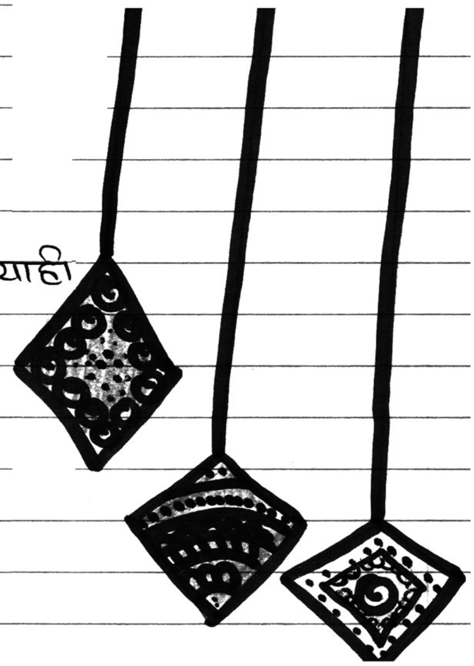

विद्यार्थी ब्लू या ब्लैक रंग,
शिक्षक की कलम का संलाल है रंग,
हर कलम की बात है निराली,
लिखने के काम आए . . . .

बच्चों को रहता है इंतजार
कब मिलेगा कलम का उपहार
नहीं पड़ेगा अब पेंसिल को छिलना,
बार - बार
इरेज़र की भी नहीं पड़ेगी अब दरकार,
ये कलम ही तो है जो कराती है
जीत या हार ।।

लिखते-लिखते वर्षों तक करते हुए,
निरंतर कठोर अभ्यास
लिखा जाता सफलता का इतिहास ।।

कड़वा सच

-राजनंदिनी-VII-'A'

गिरना भी अच्छा होता है,
औकात का पता चलता है।
बढ़ती हूँ अगर हाथ उठाने को,
तो अपनों का पता चलता है।
जिन्हें गुस्सा आता है,
वे सच्चे होते हैं..।
मैंने झूठों को अक्सर
मुस्कुराते देखा।
सीख रहीं हूँ मैं भी अब इंसानों को पढ़ना
क्योंकि,
सुना है चेहरे पे इंसानों के किताबों से
ज्यादा लिखा होता है।

प्यारी माँ

Kaustubh 7-Alpha

सबसे प्यारी माँ हमारी
जैसे हो ~~—~~ खुशियों की फुलवारी।
माँ हमें अच्छे गुण सिखलाती हैं,
गलत करने पर मार भी खिलवाती है।

सबसे प्यारी माँ हमारी
जैसे हो खुशियों की फुलवारी
उनके जैसा कोई और न अच्छा
सब में दिखे ~~उन्ह~~ उन्हें अपना ~~स्क~~बच्चा

मेरी कविता, मेरी कहानी

Vatsalya Mehta

एक बार कि बात है, मोहन स्कूल से घर वापस जा रहा था। रास्ते में उसे एक बच्चा मिला, जो ~~उसे~~ उससे पैसे मांग रहा था। लंच के लिए मोहन ₹500 लाया था जिसमें से ₹200 बच गए। मोहन ने ₹200 में से ₹100 उस गरीब बालक को दे दिया। उसके बाद मोहन वहाँ से चला गया। उसने अपने घर के रास्ते में देखा कि किसी के घर से पानी गिर रहा है। तो उसने एक सूखा पौधा का गमला उठाया और पानी जहाँ गिर रहा था, उसके जगह पर रख दिया। ~~उसे~~ फिर वह घर पहुंच गया। ऐसा वह रोज़ करता था, आस-पास के लोग सोचते थे कि "यह करके उसका क्या फायदा?" एक दिन जब हमेशा कि तरह, वह स्कूल से लौट रहा था, तो उसने देखा कि वह बच्चा वहाँ नहीं है, वह सोचने लगा कि उस बच्चे को कुछ हो तो नहीं गया क्योंकि वहाँ पर बस उस बच्चे कि माँ थी। तभी ~~उ~~ उसे एक आवाज़ सुनाई दी, "माँ!" उसने पिछे मुड़कर देखा तो उसने पाया कि वह बच्चा अब स्कूल जाने लगा है उसकी ~~मदद~~ मदद से। उसे अंदर से बहुत अच्छा महसूस हुआ। रास्ते में उसे वह पौधा भी मिला। जो कि अब हरा-भरा हो गया। वह बहुत खुश हुआ। बाकी लोगों को भी यह समझ आ गया कि उन्हें सबकी मदद करनी चाहिए।

मेरी कविता, मेरी कहानी

Apoorwanand Jha - 7 Alpha

एक बार की बात एक मोची सेहर से घर जारहा था। उस दिन उसने बहोत कम पैसे कमाकर घर जारहा था उसका नाम ~~सखो~~ सरओधन था उसके परीवार मे वो और उसका बेटा रहते थे उसकी माँ पाँच साल पहले केनसर कि वजह से ~~अपना~~ दुनीया छोड़ चुकी थी। उस दिन जब सरओधन अपने घर आ रहा था उसे ~~सेठ~~ एक आदमि मिला और वह आदमी सरओधन को घुर के देख रहा था सरओधन डर गया और वह मनही मन सोच रहा था "यह आदमी को हूँ।" "और यह मुझे ऐसे क्यों देख रहा हैं।"

तब ही वह आदमी सरओधन के पिछे आने लगा सरओधन घुम के एक दुसरे घर के रासते से जाने लगा और बोला "यह कौन हैं। और यह मेरे पिछे क्यों आरहा हैं" लेकिन सरओधन को यह नहीं पता था कि वह एक ऐसे रसते पर जारहा हा जहाँ सुबह में कोई नहीं पर रात में वह खतरे से खाली नहीं हैं।

सरओधन भागता रहा लेकी उसे आगे नही देखा और एक पेड़ मे जा टकरा तभि वह आदमी सरओधन को देख के बोला "सरओधन मैं ही समअरथ तुमारा कोलेज का दोस्त" सरओधन के पैरों को निचे से जमिन निकल गयी क्योंकी समअरथ की च्यार साल पहले ही मौत हो चुकी थी। "समअरथ" "तु मरा नहीं" मैंने ही तो तुम्हें धका मारा था।।

सरओधन और समअरथ के बिच में एक लड़ाई हो गई थी और सरओधन ने समअरथ को धक्का मार दिया।

और ~~सरओधन~~ समअरथ ने च्यार साल का दरीमा मिला और अभी समअरथ दोसती का दाम बसूलने आया था।

लड़ाई

Swapnil Singh-VII alpha

एक जंगल में हमेसा एक ही राजा होता है कभी दो राजा नहीं आ सकते। लेकिन एक ऐसा जंगल था, जहाँ एक जंगल में दो राजा था, क्योंकि वो दोनों शेर थे और बहुत अच्छे दोस्त थे, तो एक दिन बंदर यह बात पसंद नहीं आई। वह सोचा कि वह दोनों को एक दूसरे के खिलाफ भरकाना चाहिए। तो उसने एक दोनों शेर को कहा कि "हर जंगल में तो एक ही राजा होता है तुमलोग को जंगल में दो राजा हैं, सबको लगता है कि आप अकेले जंगल नहीं संभाल सकते है। यह बात बंदर ने दोनों राजा को कहा दोनों राजाओं को गुस्सा आ गया। वह दोनों एक रात बहुत घातक लड़ाई होता दोनों के बिच रात भर एक-दूसरे को रात भर चिल्लाने की आवाज सुन लोगों ने सुबह जा के देखा तो दोनों राजा लड़ के मर गया। फिर उसके बाद बंदर जा के राजा बन गया। उसके यह काम से पूरे पूरा जंगल खुश हो गया।

मेरी कहानी

Anshika Singh - 7'Alpha

एक बार की बात है एक गाँव में एक अमीर
परीवार आता है। उस अमीर परीवार में बहुत घमंड
था पर उस परीवार में एक भोला लड़का भी था
जो हमेशा गरीबों की मदद करता है उसके परीवार
वाले लोग उसे गरीबों की मदद करने से मना करते
है। पर वह बहुत अच्छा था इसलिए वह सभी परीवार
वालों से छुप कर गरीबों की मदद करता था।
एक दिन उसके घर पर एक गरीब आदमी
आया और कुछ खाने को माँगने
लगा। तब वह भोला लड़का आया और
उसे कुछ खाने को देने ही वाला था की उसके
परीवार वाले लोग उसे देख लीए और सभी उस
गरीब आदमी पैसा का घमंड दीखाने लगे और
फिर उसे भगादिया। उसके अगले दिन वही
गरीब आदमी आया और उसे कुछ बताना था
की उनके घर के पिछे आग लगी हुई ~~थी~~
थी। बस उसे वही बताना था पर जब उसने
घंटी बजाया तो तब वही भोला लड़का आगया और
सभी उसके परीवार वाले लोग उसे भगाने बोले
पर वह लड़का उसकी बात सुन लीया
और अपने परीवार वाले लोग को बताया
पर उन्हें विस वास नहीं हुआ पर
भोले लड़के को विश्वास था। तो वह वहाँ
से भाग गया और सभी उसके

परिवार को जलने की बू आने लगी तो उन्हें
पता चला की उनके सारे पैसे जलगए।
और तब उन्हें विसवास हुआ उस गरीब
आदमी पें।

हमें इस कहानी से यह सीख मिलती है
की हमें कभी घमंड नहीं करना चाहिए।

बचपन

आदया उमा, 7 'AlPHA'

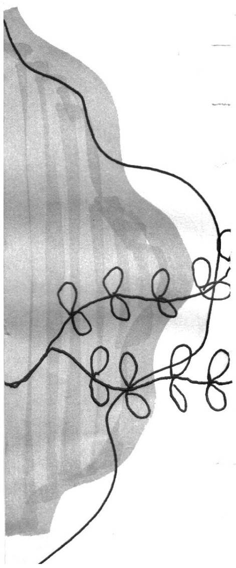

बार-बार आती है मुझको, मधुर
याद बचपन तेरी,
गया, ले गया, तू जीवन की
सबसे मस्त खुशी मेरी।
चिंता रहित खेलना, खाना,
वह फिरना निर्भय स्वच्छंद
कैसे भूला जा सकता है,
बचपन का अतुलित आनंद
रोना और मचल जाना भी क्या
आनंद दिखाते थे।

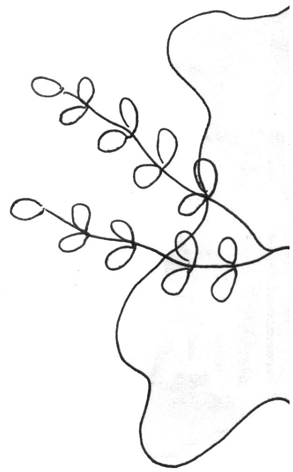

मेरी कहानी

मान्या शर्मा-7 Alpha

एक बार की बात है, एक नाग उदास
बैठा था तभी वहाँ से एक पंडित गुजरा
उसने देखा की एक नाग उदास बैठा है,
वो फिर उसके पास गया और बोला तुम
उदास क्यों बैठे हो, नाग ने बोला की वहाँ
पे बच्चें खेल रहे हैं और यहाँ पे
मैं ~~अके~~ अकेला बैठा हूँ, पंडित जी ने बोला
तो तुम उन लोग के साथ खेलो, उसने
बोला मैं उन लोग के पास कैसे जाऊँ
वो लोग मुझे देख के ही डर जाते हैं।
तुम किसी को परेशान नहीं करोगे और
नहीं काटो गे तो बच्चे तुम्हारे साथ खेलें गे।
वो फिर बच्चों के पास गया बच्चे उस से
डरना बंद कर दीये और उसके साथ खेलने लगे।
कुछ दीनों बाद जब पंडित जी वापस आ
रहे थे तो उन्होंने देखा की नाग जख्मी होकर

एक जगह पर अकेला बैठा हुआ है, उन्होंने
उसे पूछा तो वो लाल-पिला होकर गुस्से में बोला
की आपने ही बोला था न की बच्चों के साथ-साथ
खेलो उन्हें काटो मत तो मैंने वही किया
लेकिन बच्चों ने मुझे पिटा, मारा, मेरे
ऊपर बैठा। पंडित जी ने बोला की
मैंने ऐसा थोड़ी न बोला था
कि तुम उसे काटो ही मत

इस कहानि से हमें यह सिख मिलती है
की हमें सही टाइम पर सही निर्णय लेना
चाहिए।

लड़के

Karan Kumar 7a

हम लड़के हैं, थोड़ा शरारती,
पर दिल से होते हैं बड़े ही प्यारे साथी,
सुबह-सुबह स्कूल को भागते,
कभी बिना कंघी को ही आ जाते।

क्लास में बैठे रहते सीधे साधे,
जैसे कभी न किये हो दंगे-फसादे
पर जैसे ही टिचर पीठ मोड़ ले,
हम चुपके से चॉक उड़ाने लगे।

पिरियड हो मैथ्स या विज्ञान का,
हमारा दिमाग हो जाय शरीर बिन जान का,
पर खेल का समय आते ही,
हम बन जाते शेरों की टोली सी।

लड़ते हैं, झगड़ते हैं, फिर भी निभाते हैं,
अपने यारों के लिए हम जंग लड़ जाते हैं।

चिड़ियाँ

Adya Ara - 7'A'

सुबह - सुबह जब कोई न उठता,
चिड़िया हमें अपनी मधुर - आवाज़ से उठाती,
चिड़िया एक - एक तिनके से अपना नया घर बनाती,
चिड़िया अपने मेहनत से सर्दियों का खाना जुटाती,
खेतों ~~खेतों~~ के लेहरते फ़सलों के साथ, अपनी मिठी बातों से ~~सब~~ सबका मन - बनाती,
दुनिया उनहें पिंजरे मे बंद रखते,
लेकिन वह अपने मालिक से बहुत प्रेम करती,
सुबह - सुबह जब कोई न उठता,
चिड़िया हमें अपनी मधुर - आवाज़ से उठाती।

एक बच्चा !

Amrit Pandey - 7'A'

एक बार कि बात है एक बार एक
बच्चा था वह बोहोत
शैतान था एक दीन उसने
अपने घर में दिवाली का
बल्ब जला दिया तो उसको
बहुत मार पड़ी लेकिन वह
बहुत मजाक करता था
और वह अपने मित्रों और
भाई बहनों से मजाक करता था
और वह जब मजाक करता तो सारे लोग
हँसते थे यही खूबी उसी आज एक
सफल मजाक सुनाने वाला बन
गया और खूब पैसे कमाने लगा
~~उसके माता-पिता उसे पढ़ाने के लिए वही~~
बोलते थे।

मेरी कविता मेरी कहानी

शाश्वत - VII a

एक वक्त की बात थी, जब मैं सुबह उठकर
विद्यालय जाता था, तो एक रास्ते पर एक
साप रहता था। वह किसी को जाने देता था।
जब भी कोई वहाँ जाता, तब वह साप उनपर हमला
कर देता था। और मुझे बहुत दूर वाले रास्ते से
जाना पड़ा। मैं हमेशा उस साप की वजह से विद्यालय
देरी से पहुचता था और उसके लिए मुझे सजा दिया
जाता था। मैं अपने शीक्षक और शीक्षिका को हमेशा या बात
समझाने की कोशीश करता हूँ, पर वह मेरे बात पर विश्वास
नहीं किए। फिर मैं बहुत क्रोधित हो गया, और मेरा दिमाग में एक
सुझाव आया। मैंने ~~साप के~~ साँप के सामने एक मटन फेंका, जिसमे मैंने
रस्सी बाधां था। वह मटन को खाने आ रहा और मैं रस्सी से
मटन को खींच रहा था। उसको मैंने मटन से ललचा कर एक
पिंजड़े मे बंद कर दिया। फिर मैंने उसे दूर नदी में छोड़
दिया।

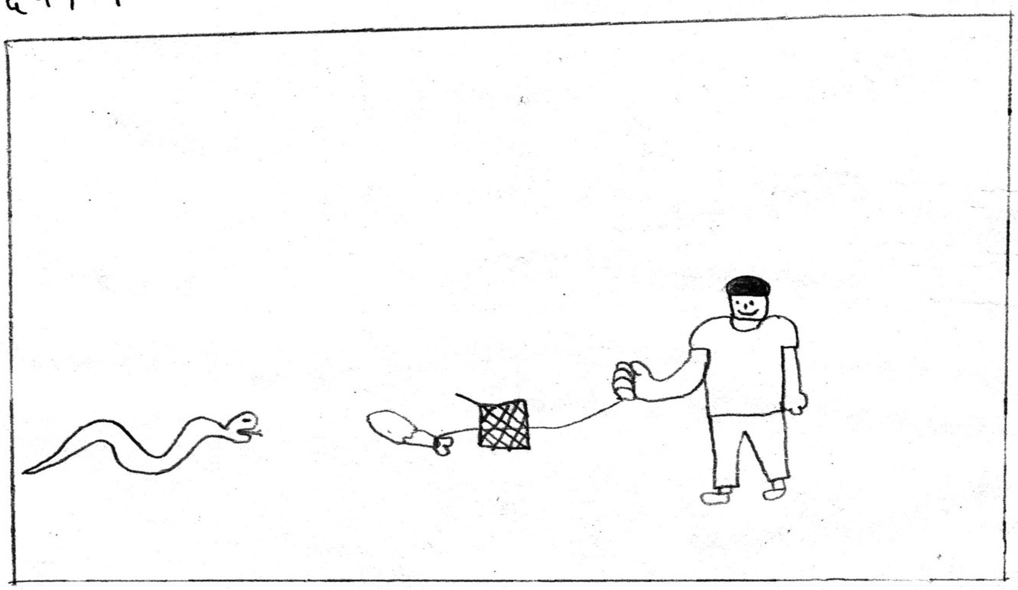

शब्दों की ज़ुबानी (कविता)

Dneha Suman - 7A

कोहरे से ढ़की सड़क पर बच्चे काम पर
जा रहे हैं।

सुबह सुबह,
बच्चे काम पर जा रहे हैं।

हमारे समय पर सबसे भयानक पंक्ति है
भयानक है इस विवरण की लिखा जाना।

लिखा जाना चाहिए इस सवाल की तरह
काम पर क्यों जा रहे हैं।

पर दुनिया की हजारों सड़क से गुजरते हुए
बच्चे, बहुत छोटे-छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

मेरी कविता, मेरी कहानी

Smita Singh

एक मोटा हाँथी झूम के चला
~~मकड़ी~~ मकड़ी की जाल में जाके वो फँसे
जाल को देखा देख के डरे
दूसरे हाँथी को इशारे से बुलाया
इधर आ, इधर आ, इधर आ!

दो मोटे हाँथी झूम के चले
मकड़ी की जाल में जाके वो फँसे
जाल को देखा देख के डरे
तीसरे हाँथी को ~~इसार~~ इशारे से बुलाया
इधर आ, इधर आ, इधर आ!

तीन मोटे हाँथी झूम के चले मकड़ी कि
जाल में जाके वह फँसे जाल को देखा
देख के डरे चौथे हाँथी को इशारे
से बुलाया इधर आ, इधर आ, इधर आ!

चार मोटे हाँथी झूम के चले मकड़ी कि
जाल में जाके वह फँसे जाल को देखा
देख के डरे। पाँचवे हाँथी को इशारे से
बुलाया इधर आ। इधर आ। इधर आ।

मेरी कविता, मेरी कहानी

Syed Zyan Faisal, VII

एक दिन की बात है,
एक बच्चा था जिसका नाम मोहन था,
वो हमेशा दूसरों को परेशान करता था,
एक दिन उसके कक्षा में एक नया
बच्चा आया जिसका नाम सोहन था
एक दिन मोहन ने सोहन को
बोला " मेरा बाग घर तक
~~पो~~ छोड़दो " पर सोहन माना
कर दिया तो मोहन को बहुत

दो बैलों की कथा

नव्या रस्तोगी 'VII बीटा'

एक बार की बात है, दो बैल थे आयु और मधु | उन का मालिक बहुत अच्छा था, उनका अच्छे से ध्यान रखता था, पर वह इस बात से अंजान था की वे बैल, बैल नहीं एलीयन थे और दो पैर पर चल भी सकते थे | वे मार्स से आए थे | एक दिन उनहें उनके राजा ने उनहे एक पत्र भेजा और कहा "मेरे प्यारे शेर जाओ और भूत पकड़ के लेकर आओ" | वे बैल बोले के "काम हो जाएगा" और तीयार हो जाते हैं | अनहें एक भुतीया हवेली के बारे में जानते थे, और उधर पहुंच गए | वे वहां पे जाते ही सहम से गए पर फिर उनहें याद आता हैं की वह एलीयन हैं | भूत सामने आजाता हैं, पर वह लंगड़ा था और बैहरा था,

तो वे बैल हसने लगे। और एक हु
ने में ज़यादा मेहनत नही लगी।
वे फिर मार्स जाते हैं और वह भुत,
राजा को देदेते हैं और वापस आजाते हैं
एक रात में। राजा उस भुत के देखकर कहता
है " आमा ला लोगा गलामाल " अरे ट्रांसलेट
करना भुल गई, तो वह कहता है
" बड़ा ही अजीब भुत है " । पर जब
वे धरती वापस जा रहे थे तो वह भुतों के
ग्रह पे पहुच गए, और वापस कभु
धरती न जा सके, क्यों की जल्दे में
वह लंगड़ा भुत उन पर एक चिप
लगा दीया था और वह लंगड़े के
सच पता चला।

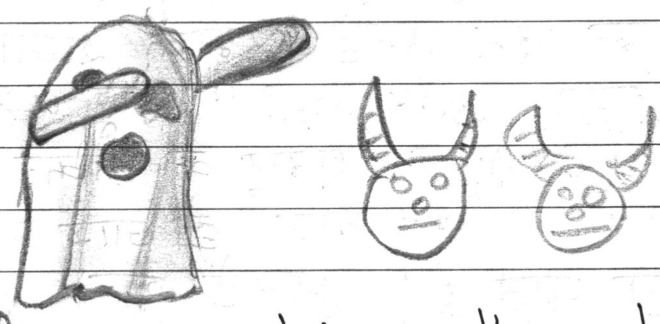

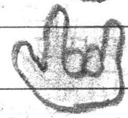
भुत रॉकड , बैल शॉक्ड

मेरी अधुरी कहानी

युवराज सिंह यादव - 7B

हर किसी की एक ऐसी इच्छा होती है जो अधुरी रह जाती है। मेरी भी एक इच्छा थी। इच्छा तो अभी भी है पर पूर्ण नही हो सकती। मेरा पढ़ाई के साथ एक अच्छा फुटबॉलर का भी है लेकिन आँख में कुछ समस्या होने के कारण डॉक्टर ने मना कर दिया। पर मुझे इस बात से कोई परेशानी नहीं है पर यह तो मेरी एक छोटी-सी घटना है, ऐसे कई लोग होते हैं जो किसी कारण से अपने सपने को नही पुरा कर पाते हैं। पर उन्हें अपने आप को पहचाननी चाहिए क्योंकी सभी इंसान में एक खूबी होती है। ये तो सिर्फ मेरी छोटी सी कहानी थी, ऐसे कई लोग हैं जिनके साथ ऐसा हुआ है और मेरा एक मित्र है अभीशेक वो क्रीकेट बहुत अच्छा खेलता है पर घर की आर्थी स्थिती और परिवार वालो का सहयोग ना मिलने के कारण वो अपने सपने को पुरा नहीं कर पाया, पर वो पढ़ने में भी अच्छा है तो वो अब अपनी पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देता है लेकिन अब भी वह क्रीकेट खेलता है। यह सिर्फ एक घर की नहीं कई बच्चो को माँ-बाप पढ़ाई के लिए बोलते हैं। उन्हें भी समझना चाहिए सभी को पढ़ाई नहीं होता है, कुछ खेल-कूद और कुछ संगीत में, पर वो ऐसा नहीं कर पाते हैं।

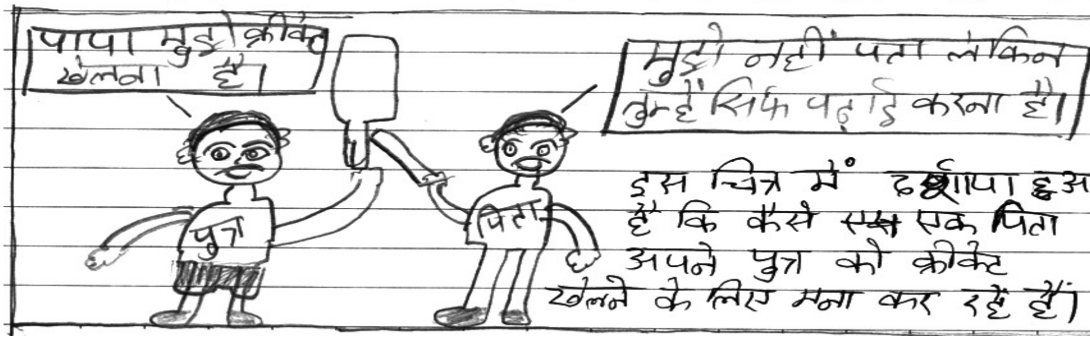

इस चित्र में दर्शाया हुआ है कि कैसे एक पिता अपने पुत्र को क्रीकेट खेलने के लिए मना कर रहे हैं।

"हमारी कविता, हमारी कहानी"

Aarushi Kashyap, 7B

एक बार की बात है, एक शहर में एक बहुत बड़ा विद्यालय था, उसमें दो दोस्त पढ़ते थे, एक का नाम आरुही और दूसरे का नाम आकृति था, एक बार उस विद्यालय में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया लेकिन, परीक्षा के दिन भी पास आ गये थे, ~~आरुही के मम्मी पापा~~ जब लंच का बेल लगा तो आकृति ने बोला अरे! हमारे विद्यालय ने एक कार्यक्रम आयोजित किया है, मैं तो भाग लूँगी, तभी आरुही ने बोला मैं भी भाग लेना चाहती हूँ, पर परीक्षा पास आ गया है; मेरे मम्मी, पापा मुझे अनुमति नहीं देंगे, यह कहकर वे चले गये, आकृति के मन में आया क्यों न मैं आरुही के माता-पिता से बात करूँ। शाम को वह उसके घर गयी और बोली "आरुही, आरुही, तभी उसकी मम्मी ने बोला बेटा, आरुही अभी पढ़ रही है, तभी उसने बोला आंटी; आप और अंकल उसे स्कूल के कार्यक्रम में भाग लेने से क्यों मना कर रही हैं तभी उन्होंने बोला अभी तुम बहुत छोटी हम अच्छे से जानते हैं कि क्या सही है और क्या गलत और तुम जाओ यहाँ से, यह सुनकर वह चली गयी और अगले दिन ये सारी बातें अपने शिक्षक को बतायीं, ऐसे ही परीक्षा आई और खत्म हो गई, रिजल्ट का दिन आया दोनों अपने माता-पिता के साथ आए,

तभी ~~आरुषी~~ शिक्षक ने बोला "आरुषी के पढ़ाई में तो अच्छे अंक आए हैं लेकिन बाकि के चीजों में कम आपलोग इसे पे पढ़ाई का इतना जोर दे देते हैं कि ये मेन्टली स्टेबल नहीं है।"
आपलोग इसे कृपया वो काम करने दे जिसमें इसे रूचि है; लेकिन केवल सही काम।

और आकृति के अच्छे अंक प्राप्त हुए और वो हर चीज में अच्छी थी।

शीर्षक: इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें वो करना चाहिए जिसमें हमें रूचि है, लेकिन वो काम सही होना चाहिए।

रोहन और उसका दोस्त

आदित्य राज गुप्ता, 7B

एक बार रोहन अपने माता-पिता के साथ बनारस घुमने गए रोहन जैसे ही बनारस पहुँचा उसे भूख लग [redacted] गया तो वह होटल मे पहुँचा वह पर उसे उसका पुराना दोस्त मिल गया वह दोनो एक दूसरे से बहुत बात किए दोनों बहुत [redacted] घुमे जब वह गंगा स्नान करने गए तभी एक चोर रोहन के पिता जी का जेब काट लिआ वह लोग चोर के पिछे बहुत भागे पर चोर भाग निकला फिर वह लोग पुलिस के पास गए तो पुलिस ने ए-फी-आर लिख लिए फिर रोहन के दोस्त ने कहा कि आप लोग का यहाँ रहने का कोई मतलब नहीं है आप लोग चले जाइए जाइए जब आपका पर्स मिलेगा तो मैं आप लोग को बता दूँगा रोहन के पिता के पास घर जाने के लिए ही कुछ

पैसे थे तो वह लोग चले गए और रोहन का

दोस्त खुश यह ही चाहता था क्योंकि चोर, पुलिस,

रोहन का दोस्त सब मिले हुए थे। इसी तरह

10 साल से रोहन, रोहन के माता और पिता

रोहन के दोस्त का फोन का इंतजार [redacted] रहे हैं।

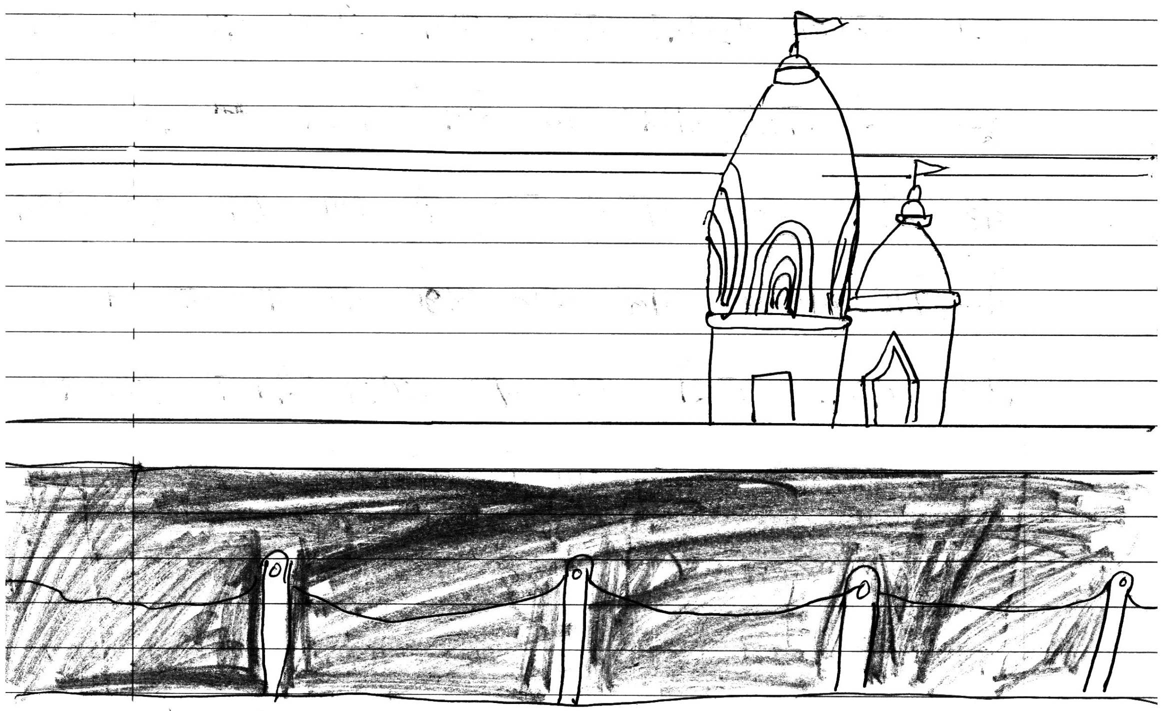

बहरे की कहानी

तव्या सिन्हा 7B

एक समय की बात है, रामनगर में एक राजु नामक का एक बहरा लड़का था। उसके माता-पिता ने उसे एक साधारण से स्कूल में उसे डाल रहे थे उन्हें लगा कि सब अच्छा होगा। जब राजु अपने कक्षा के अंदर आया तो उसे लगा सब शांत था। पर उसकी कक्षा-अध्यापिका ने उसका नाम पुकारा तो उसने कुछ न कहा क्योंकि वह सुन नहीं सकता तो कक्षा अध्यापिका उसका नाम नाराज हो कर पुकारती है "राजु! क्या तुम बहरे हो सुनाई नहीं दे रहा तुम्हें" तो राजु ने एक झलक दी जैसे उसे एहसास हुआ कि उसे कोई पुकार रहा हो। फिर ऐसे ही राजु दिन खतम हुआ तो फिर उसकी माँ ने उसकी कक्षा अध्यापिका को फोन किया कहा "मैम मैं आपसे माफी चाहती हूँ पर राजु सच में बहरा है तो मैं चाहती हुँ सारे बच्चों के तरह में राजु के वहीं व्यवहार होना चाहिए!" तो कक्षा अध्यापिका कहती है "ठिक है पर अगर वो सुन नहीं पायगा तो वो कक्षा पर ध्यान कैसे देगा?" तो राजु कि माँ कहती है "आप वह मुझ पर छोड़ दिजिए मैं सब संभाल लुँगी" तो ऐसे ही हमेशा उसकी माँ उसे लिखकर पढ़ाती ताकि उसे समझ आये। पर राजु के कक्षा के सारे लड़कों को लगता वह कुछ नहीं कर पायगा। पर राजु कि माँ कुछ न कही क्योंकि उन्हें राजु पर भरोसा था। फिर ऐसे ही दिन कटते गये फिर कुछ सालों बाद समय आगया कि राजु को नौकरी के लिए जाना था जब वो नौकरी लेने गया तो उसे कुछ सवाल पूछे गये। लिखकर।

पर क्या हुआ कि उस नौकरी के मालिक को वह बहुत पसंद उसके जबाब सुन कर उन्हें लगा कि ये सबसे अलग है इसके जबाव तो बहुत अच्छे है।

शीर्षक : इससे हमें यह पता चलता है कि चाहे कोई कैसा हो, कोई भी कमी हो वो इंसान सबके तरह होते हैं।

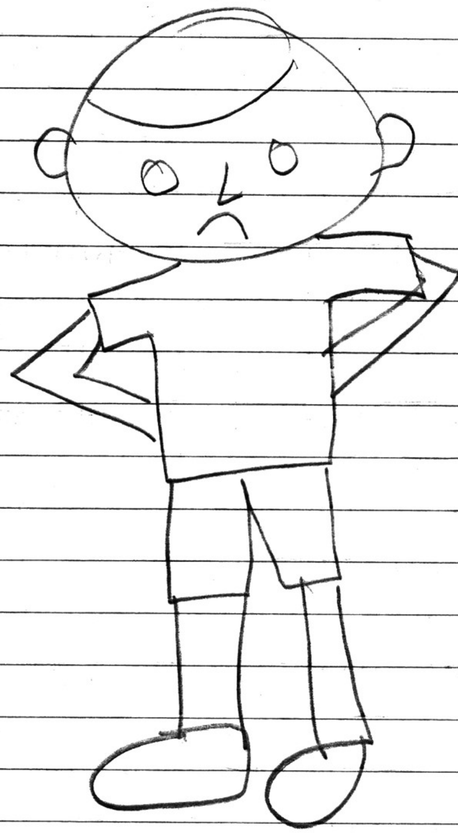

विजयानगर का घोड़ा

Vagisha Kumar - 7B

एक बार कि बात है विजयानगर नाम के गाँव में दो परीवार रहते थे जीनके के पास घोड़े थे। एक दिन जब अमीर परीवार अपने घोड़े को खिला रहे थे मोहन जो गरीब परिवार का था वह अपने घोड़े को नहला रहा था। जब उन्होंने मोहन के घोड़े को देखा तो बोलने लगे "तुमहारा घोड़ा तो कितना सस्ता है और कितना कमजोर है हमारे घोड़े तो तुमहारे घोड़े से लाख गुना अच्छे है।" और फीर हसने लगे। मोहन को यह सुनकर गुस्सा आया और बोला कि "अगर तुमहारे घोड़े इतने अच्छे है तो क्यू ना हम कल एक प्रतीयोगिता रखे यह देखने के लिए कि किसका घोड़ा जयादा अच्छा है।" जब उन्होंने यह बात सुना तो मुसकुराके बोले "क्या तुम मजाक कर रहे हो? तुमको सच में एसा लगता है कि तुमहारे घोड़े हमारे घोड़े को हरा सकते है?" मोहन यह सुनकर बोला की "डर गए क्या?" यह सुनकर उन्होंने बोला की "बिलकुल नहीं!" "तो लगाओ बाजी

दो हफ्ते बीते और जब प्रतियोगिता का दिन आया तो उनके घोड़ा मजबूत लग रहे थे लेकिन मोहन का घोड़ा को देख कर लग रहा था कि वह बहुत दिन से खाया नहीं है और कि बहुत कमजोर भी लग रहा था। उन्होंने ने प्रतियोगिता शुरू होने से पहले मोहन एक बहुत लंबा डंडा लाया और उसके एक अंत पर घास लगाई और इसे उसके घोड़े के आगे लटका दिया।

जब प्रतियोगिता शुरू हुई तो क्योंकि घोड़ा बहुत दिन से नहीं खाया था वह बहुत तेज भागा और जीत गया। और जब वह जीता तो वह बहुत हैरान हो गए थे।

इसके बाद उसको इनाम मिला और सब लोग हैरान ही रहे।

हमारी कवीता, हमारी कहानी

अलकमा हमजा, '7' बीटा

एक बार एक बच्चा जंगल में गुम गया था, असल में तो उसके माँ-बाप ने ही उसे वहाँ फेंका था क्योंकि वह डिसेबल्ड था मतलब वह अपने हाथ पैर नहीं चला सकता था और यह बात सुनकर उसके माँ-बाप ने सोचा यह तो आगे चलकर कुछ नहीं करेगा वह नाही कर सकता है, यह बस एक बोझ बनकर रहेगा जिस कारण वर्ष उससे उनहे कोई उमीद ना थी।
उस बच्चे को एक अदमी लेकर गया और उसके बारे में अस्पताल में लिखवाया जब उसे पता लगा कि यह डिसेबल्ड है वैसे ही वह उसे बेचने चला गया।

इस कहानी से हमें यह समझ आता है की बिना फायदे के कोई आपका नहीं।

यह कहानी सुनने में थोड़ी अलग क्यों न लगे यह दुनिया के एक दूसरे पहलू को दिखाती है।

गली का हीरो कुत्ता

Sanghvi Gupta, 7 B

पटना के एक गली में एक कुत्ता रहता था। उसे सब 'शेरू' बुलाते थे। उसे कभी कोई पथर फेंक कर मारता तो कभी खाना फेक कर देता। शेरू सब चीच चुपचाप सह लेता।

एक सुनहरे दिन कि बात है। बच्चों कि छुट्टी थी आज। सब बच्चे खेल रहे थे। उस में से एक बच्ची रीया सड़क पार कर रही थी। उतने में ही एक तेजी सी ट्रक रीया को टक्कर मारने वाली थी। सब बच्चे जोर-जोर से चिलाने लगे।

उतने में ही शेरू कि नज़र रीया पर गई और वह तेजी से उसे धका दिया। भगवान कि वजह से शेरू को ज़्यादा चोट नहीं लगी परंतु उसके पीछे वाला पैर घायल हो गया था। रीया को कुछ नहीं हुआ था। रीया कि माँ दोड़े-दोड़े आई और शेरू को गला लगा ली। रीया कि माँ जलदी से शेरू को पास के असपताल में ले गई। कुछ दिनों के बाद शेरू का पैर ठीक होगया।

अब लोग उसे अवारा कहने की जगह, हीरो कहने लगे थे। एक आदमी ने शेरू के लिए घर बन वाया और अब लोग उसके लिये खाना भी लाने लगे। बच्चे अब शेरू के साथ खेलने लगे। और शेरू भी खुश रहने लगा।

शीर्षक → परवाह मत करो कि आपको कोई कैसे वैसा आए आपको हमेसा लोगों के साथ अच्छे से वैसा आना चाहिए।

शब्दों की जुबानी

एक बार की बात है एक शहर में एक आदमी
रहता था वो बहुत अमीर था वो चंदन की
लकड़ी की तस्करी करता था। तो एक बार
वो तस्करी करने के काम से चन्नई गया।
वहा एक गाँव में एक आदमी ~~मैं एक~~
~~बहुत~~ [illegible] र था जो बहुत गरीब
था। उसके पास कुछ खास नौकरी नहीं
थी। उसके पापा ने मेहनत से पैसे
कमाए और उसे एक अच्छे स्कूल
में पढ़ाया और वो अब एक पुलिस
ऑफिसर बन गया। और उसे पहला
ड्यूटी मिला कि कुछ लोग चंदन की तस्करी
कर रहे है। तो वो चन्नई को अच्छे
तरह से जानता तो उसने एक गाड़ी
को देखा जो कुछ अजिब दिख रहा
था तो उसने उस पर जी.पी.एस
ट्रैकर लगा दिया और जब उसने
पुलिस स्टेशन पर देखा तो वो
रामेश्वरम का दिखा रहा था तो
वो रामेश्वरम जाता है तो उसे
ऐसे ही बहुत सी गाड़ी उसे दिखी
तो उसने देखा कि एक आदमी है
जिसका नाम पुष्पा था। और उसने
पुलिस को कहा कि एक लाख रुपय
पर, मोबाइल जो पर सैनिकने कहा कि
मैं अपने देश को बचा रहा हूँ
और उसने पुष्पा को गिरफ्तार कर
लिया। और इस पुलिस दरोगा को
मेडलो से सम्मानित किया गया था
क्योंकि उसे 20 साल कोई नहीं पकड़
पाया था।

बदलती दुनिया

प्रियम रवि '7' Beta

दुनिया बदल रही है रोज,
बदल रही है इसकी सोच।
कभी कोरोना, तो कभी युद्ध की बात,
कभी बर्फ, तो कभी बरसात।

मैं छोटा हूँ, पर समझता हूँ,
मैं भी महसूस करता हूँ।
पेड़ कट रहे, नदियाँ सूख रहीं,
धरती भी अब उदास दिख रही।

पढ़ाई भी अब स्क्रीन पर होती,
और स्कूल वाली खुशी नहीं होती।
दोस्तों से मिलना मुश्किल है,
खेल के मैदान की खामोशी खलती है।

माँ कहती, "तू सपना न खो"
"तू अपने मन के दरवाज़े को खोल!"
तो, मैं भी सपने बुनता हूँ।
अच्छी दुनिया की बात सोचता हूँ।

जहाँ सुख हो, हो हरयाली,
जहाँ न हो दुख, न हो बदहाली।
जहाँ मैं और मेरे दोस्त मिल सके,
खुश रहकर खेल सके, पढ़ सके।

तो आओ!
चलो मिलकर दुनिया को सजाएँ,
सच, दया और साहस से रास्ता बनाएँ।

घर में भूत

आदर्श मिश्रा, VII 'B'

एक बार की बात है, मैं अपने कमरे में आराम कर रहा था। उस दिन मैं घर में अकेला था और मेरे माता-पिता किसी काम से बाहर गए हुए थे। अचानक रात में लाइट चली गई और पूरे घर में बस अंधेरा ही अंधेरा था। मैं अपने बेड पर बैठ कर मोबाईल चला रहा था। मैं उठकर मोमबत्ती ढूंढने गया लेकिन मुझे वहाँ नहीं मिली। मैं बहुत डरने लगा था और मुझे अजीब सा महसूस होने लगा था। मैं वापस अपने बेड पर वापस चला गया और कंबल में घुस गया। कुछ देर बाद मुझे अपने कमरे के दरवाजे से कुछ आवाजें आने लगी। मैंने डरते-डरते कंबल हटाया तो मुझे अपने दरवाजे के पास एक साया दिखा। वह साया न हिल रहा था और नाही करीब आ रहा था। मैं काँप उठा और पसीने से भीग गया। मैंने अपने पापा-मम्मी को कॉल कर दिया कुछ देर मेरे पापा-मम्मी आ गये।

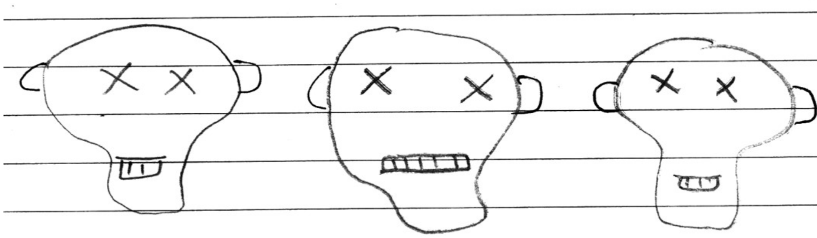

"हमारी कविता, हमारी कहानी"

Hammad Afaque-7B

एक आदमी था। जो ~~[illegible]~~ जंगल के रास्ते अपने काम के लिए जाया करता था। एक दिन वह अपने काम से लौट रहा था, की बहुत शाम हो गयी थी। जब वह वापस लौटने का सोचा तो भी वापस चला जाए। जब वह लौटने लगा तो उसने सोचा अब खाऊँ। अब रात होने वाली थी उसे एक हवेली दिखी तो उसने सोचा यही ~~[illegible]~~ सोच कर वह अन्दर गया ~~[illegible]~~ तभी उसे एक अजीब सी आवाज आयी तो डर कर एक कोने मे छुप गया तभी ~~उसे~~ ~~याद~~ याद आया की यहाँ एक गुप्त रास्ता

रहता है। उसने शीशा की
ओर इसका पता लगाया कर
रहेगा उसने देखा कि एक
कमरे की तरफ पैर के
निशान दिखे उसने जाने
को सोचा और वह गया
तो एक समुद्र के पार
से भूत बनने की
एक्टिंग कर रहा था।
उसने पुलिस को बताया और
पुलिस ने उसे पकड़ा लिया

छठ पूजा

Priyanshu Kumar- VII B

मैं, आज बहुत खुश था। मेरी दादी और मम्मी एक साल के बाद छठ पूजा कर रही थीं। मेरी स्कूल कि छुट्टीयाँ भी मिल गई थी, मेरे पापा को भी अपने दफ्तर से छुट्टी मिल गई थीं। हामारी ट्रेन कि टिक्कट भी कनफॉर्म हो गई थी। मैं एक साल के बाद अपना गाँव जा रहा था। मेरे मन में एक अलग ही स्कूर्त और शान्ती थी, मुझे बहुत खुशी हो रही थी क्योंकि घर में मेरे सारे भाई, बहन और रिशतेदार आए हुए थें। मैं जब अपने गाँव पहुँचा मेरी दादी, मेरे सारे भाई बहन हमें देख करके बहुत खुश थी, मेरी दादी हमें देख करके रोने लगी थी क्योंकि वे हमें एक साल के बाद देख रही थीं। जब हम लोग छठ पूजा का प्रसाद लाने के लिए जा रहें थें तो हमारी गाड़ी में छठ का गाना चल रहा था, वे न सिरफ छठ का गाना नहीं हमारी ईमोशन थीं। जब प्रसाद लाने गए बाजार में तो एक भी व्यक्ती ने अपने पैरों में चपल नहीं पहना था, पूरा बाजार साफ था हर जगह छठ का गाना बज रहा था। प्रसाद लेकर हम लोग घर गए, तीसरे दिन छठ था, उस दिन प्रसाद को अच्छे से दउरा में रख कर लेगए, पूजा हुआ पूजा होने के बाद घर आए घर आने के बाद सब साथ में प्रसाद खाए। जब पूजा खतम हो गया, जब घर जाने का समय आया तब बहुत अजीब लग रहा था आने का मन नही कर रहा था, पर आना पड़ा।

चिन्टु और उसका गिफ्ट

Harshit Kumar 7 Beta

एक बार की बात है। एक चिन्टु नाम का लड़का था, उसका जनमदिन आ रहा था। वह अपने जनमदिन के लिए बहुत खुश था। सोचते-सोचते वह अपने पापा के पास गया और पुछा, पापा-पापा आप मेरे जनमदिन पर क्या गिफ्ट दोगे। उसके पापा ने कहा, "बेटा गिफ्ट कभी बताया नही जाता।" आखिरकार वह दिन आ हि गया, जिस दिन चिन्टु का जनमदिन था। वह बहुत खुश था। उस दिन उसके पापा ने उसको एक महंगी घड़ी दिलाए। वह बहुत ज्यादा खुश हो गया। कुछ दिन बाद चिन्टु ने अपनी घड़ी को अलमीड़ा मे छुपा कर रख दिया और खेलने चला गया। जब वह घर वापस आया तो वह भूल गया था कि उसका घड़ी कहा है। वह मायुस होकर बैठ गया। उसके पापा आए उन्होने घड़ी के बारे पुछा। चिन्टु ने बोल, "पापा घड़ी भुला दी।"

उस दिन उसके पापा ने उसे बहुत डाँटा।
कुछ दिन बाद उसके पापा अलमीरा साफ कर रहे थे। उन्होंने उसी घड़ी को एक डिब्बे में देखा तब उन्हें एहसास हुआ कि, "मुझे चिन्टू को नहीं डाँटना चाहिए था।"

एक भुतिया चोर की कहानी

Md. Shayan Jamal - 7 B

एक बार की बात एक गाँव था
उस में हर रात में बिना
पैर वाला चोरा आता था।
तो सारे गाँव वाले छुप जाते
थे और अचानक से गाँव
के दुकानों में चोरी हो जाता
था कुछ दिनों तक ऐसे ही
चलता रहा। फिर एक दिन एक
बहादुर आदमी अपने खिड़की
से छुप कर देखा कि
कौन करता है तो पता चला
वो भूत कोई भूत नहीं
था वो तो एक चोर हमेशा

हमेशा एक चोर के पैर मे
पंखा लगाकर उड़ता हुआ आता था
और चोरी करता था।
इस कहानी से हमें यह पता चलता
है कि कोई भूत नहीं होता है।

एक शतरंज खिलाड़ी

प्रणव मिश्रा 7B

एक बच्चा था जिसका नाम साहिल था।
उसका भाई शतरंज खेलता था परंतु
उसे शतरंज अच्छा नहीं लगता था
जब वह और उसका भाई 10 वर्ष
के हुए तो साहिल ने देखा
की मेरा भाई मेरे दादा जी के
साथ शतरंज खेल रहे और उन्हें
दादा जी ने शाबाशी दिया।
साहिल ने भी शतरंज खेलना चालू
किया वह साथ में हर जगह मुकाबले
लड़ते परंतु साहिल उतना
अच्छा नहीं खेलते थे माँ-बाप और
भाई साहिल को अलग मुकाबला नहीं

खेलना चहते थे साहील ने हट की
पर डाँट खाकर "तुम अच्छा नहीं
खेलते हो, पैसा बरबाद हो जाएगा"
दादा जी ने तब भी ने साहिल को खेलाया।
और वह दुनीया के सबसे छोटे ज्यादा
रेटेड प्लेयर बने

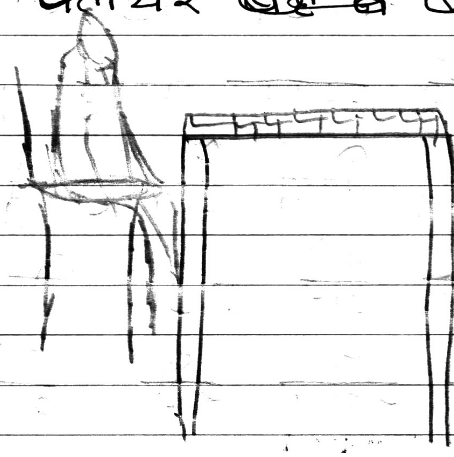

मेरे प्यारे गली के कुत्ते !

ज़ोया - 7th beta

मैं एक दिन अपनी माँ के साथ बाज़ार गई थी। जब हम वापस लौट रहे थे अपने घर, माँ के हाथों में ~~बोहोत~~ बहुत सारा सामान था, माँ के हाथों में सामान होने के कारण माँ ने मेरा हाथ छोड़ दिया, मैं उस वक्त ~~बोहोत~~ बहुत छोटी थी और ~~बोहोत~~ बहुत बदमाश भी, जैसे ही माँ ने मेरा हाथ छोड़ा वैसे ही मैं दौड़ना शुरू कर दी, माँ ने तो मुझे पुकारा लेकिन मैंने एक ना सुनी 15 सेकंड दौड़ने के बाद मैं जब अपने कोलोनी के रोड में पहुँची तब मैंने देखा ..... एक कुत्ते का झुंड !!! जो बालू के ढेर पर बैठे थे। मैंने कुत्तों को देखा, कुत्ते ने मुझे देखा, फिर मैंने कुत्ते को देखा और भागना शुरू कर दी। उस कुत्ते के झुंड ने मुझे ~~बोहोत~~ बहुत दौड़ाया, फिर माँ ने मुझे बचाया। फिर माँ घर पर आकर ~~बोहोत~~ बहुत मारी :-> और बोली "तुमको कौन बोला था दौड़ने !" ?

शिक्षा = कुत्तों से दूर रहो !!

हमारी कहानी

LAKSHITA-VIII 'A'

एक गाँव मे मुन्नि नाम कि एक लड़की रहति थी। वह VIII कक्षा में पढ़ति थी। उसे नित्रय करना बहुत पसन्द था, पर उसके माता, पिता उसे हमेशा पढ़ने के लिए कहते रहते थे। एक दिन मुन्नि पढ़ रही थी तभी उसकी दोस्त परि आकर उससे पुछि कि "क्या तुमने नित्रय के प्रत्योगिता के बारे मे सुना है??" मुन्नि ने बोला, हाँ मुझे पता है। "तो फिर तुमने क्या सोचा है प्रत्योगिता मे जाने के बारे मे" परि ने पुछा। मुन्नि दुखि होकर बोलि कि "मै प्रत्योगिता मे नही जा सकति क्योकि माता पिता ने मना किया है। मुन्नि ने परि से विन्ति किया कि वह उसके माता पिता से इस प्रत्योगिता के बारे में। परि बोलि 'ठिक है'। परि ने उसके माता पिता को बहुत समझाया कि मुन्नि का बहुत मन है इस प्रत्योगिता मे ... । उसके माता पिता उस समय परि को मना कर दिया कि मुन्नि प्रत्योगिता मे भाग नहि लेगि परंतु कुछ समय बाद उसकि माता को बुरा लगा कि उसने मुन्नि के सपनो पे पानि फेर दिया। इसलिए उसने मुन्नि को भाग लेने दिया और मुन्नि ने प्रथम स्थान लाया।

राजा की लापरवाही

रुद्र आनंद, 4a

एक बार मोहन अपनी बहन मीना और अपने माता पिता के साथ एक गाँव में रहता था। एक बार उसकी बहन हर बार की तरह खेलने गई तभी ऐलान हुआ की घर में जितना भी चावल होगा वह सभी राजा के दरबार में जाएँगा, एक साल के बाद हाथी के द्वारा चावल की बोरी जा रही थी। मीना ने देखा की एक हाथी पर जो बोरी थी उसमे एक छेद था जिसमें से चावल गिर रहा था तभी उसने एक हाथ में उसे गिरने से बचाया और वैसे ही राजा के दरबार तक पहुँची और राजा को गिरा हुआ चावल दिया। तब राजा खुश हुआ और बोला माँगो तुम्हें जो चाहिए, तो मीना ने माँगा, हमे सिर्फ हर दिन एक-एक टोकड़ी चावल के दे-देना। राजा बोले ठीके ऐसे करते हुआ राजा की सारी चावले खत्म हो गई।

तभी राजा को एहसास किया कि मुझे सोच समझ कर हाँ बोलना चाहिए था।

दोस्त बने अनजान

Aditya Singh, VIII A

एक बार की बात है। तीन दोस्त पक्के भाई की तरह रहते थें। वह लोग हर समय एक साथ रहते थे। एक साथ वह खेल खेलते थे। सुबह उठते ही वह लोग घूमने जाते थें, दोपहर में वह लोग साथ में फ्रि फायर खेलते थें और टाइम पास करते थें। उनकी दोस्ती इतनी गहरी थी की लोग मिसाल दिया करते थें। पर किसको पता था एक दिन उनके साथ कुछ ऐसा हो जाएगा की वह लोग एक-दूसरे को जानने से इनकार कर देंगें। वह लोग शाम में क्रिकेट खेल रहे थें तब वहाँ एक लड़का आया वह उन लोगों का अच्छा दोस्त बन गया था। वह लोग तीन से चार हो गए। वह इतना घुल-मिल गया था की अब वह चारों साथ मे ही रहते थे पर उन तीनो में से एक को उस चौथे से गुस्सा आने लगा था, उसे लगता था की उसके दोस्त उसे ज्यादा चौथे के साथ ज्यादा रहते थे। और फिर वह तीनों भाइयों (दोस्तों) में लड़ाई होने लगा और फिर सबने बातों को दिल पर ले लिए और सबने बात बंद कर दिया और अब कई साल बित गये पर अब वह लोग एक-दूसरे से बहुत नफरत करते हैं और एक दुसरे को देखना भी नहीं चाहते हैं।

हमारी कविता, हमारी कहानी

Navya Shrivastava, VIII 'A'

एक बार की बात है, एक परिवार में एक बेटी-बेटा और माता-पिता रहते हैं। वे बहुत ~~गरिब~~ गरीब परिवार था। उसके पिता खेती करते थे, अपने परिवार को चलाने के लिए। उसके दोनों बच्चे पहले विद्यालय में पढ़ने जाते थे, परंतु पैसों की कमी के कारण उसने बेटी का नाम विधालय से कटा दिया। पर उसके बेटे का मन पढने में ~~मन~~ नहीं लगता था, और वहीं उसकी बेटी पढ़ लिख-कर एक बड़ी अधिकारी बनना चाहती थी। वह यह जानकर उसने अपनी बेटी के पढ़ाई के लिए कर्ज़ लिया और उसे शिक्षा देने का फैसला किया। उसकी बेटी दिन-रात मेहनत कर पढ़ती थी यही उसका बेटा खेल-कूद और मौज-मस्ती में लगा रहता था। परिणाम में उसकी मेहनत रंग लाए और वो एक अधिकारी बन गयी एवं उसके माता-पिता का नाम उसने रौशन कर दिया। जबकि उसका बेटा कुछ नहीं कर पाया।

सीखः- इस कहानी से हमें यह शिक्षा। सीख मिलती है कि मेहनत से ही हमें सफलता प्राप्त होती है।

एक सितारा सबसे प्यारा

Rudresh - VIII 'A'

एक बार की बात अमृत नाम का एक बच्चा था। उसका सपना बहुत बड़े कलाकर बनने का था। वह पढ़ाई में दिलचई करता था। उसके माता-पिता उसे चिकित्सक और अभियंता बनने के लिए प्रेरित करते थे। उसके दोस्त उसे कलाकार बनने के लिए प्रेरित करते थे। वह छुप-छुप के कलाकृति करता था। उसके माता-पिता को यह पसंद नहीं था। एक दिन एक गरीब बच्चा उनके घर आया। उस बच्चे को अमृत के माता पिता ने खाना खिलाया। उन्होंने उसे पूछा, "तुम्हें क्या पसंद है। उसने कहा कि मुझे चित्र कला में रूचि है पर, सबके नसीब मे कहा। तब उसके माता-पिता को समझ में आया अमृत की कला के बारे में। तबसे वह अमृत को उसके सपना पूरे करने में मदद करेंगें।

शब्दों की जबानी

हमारी कविता, हमारी कहानी

देव शर्मा -8 'A'

(कोई दूसरा नहीं होता सब अपने होते है)

एक रामनगर नाम का गाँव था, वहाँ पर मोहन और देव रहते थे। वहाँ गाँव के अंदर एक जंगल था वहाँ पर आदिवासी रहते थे। एक दिन देव और मोहन अपनी गाय चराते जंगल के अंदर चले गये। और अपने घर का रास्ता भूल गए। और वह लोग एक गुफा के अंदर रात बिताये और सुबह में एक आदिवासी ने उनको देखा और उनसे कहा "तुम लोग यहाँ पर कैसे आए" देव बोला "हम अपने गाय को चराते-चराते जंगल के अंदर आगए" आप हमें गाँव का रस्ता बता सकते है। आदिवासी बोला "मेरे को गाँव का रस्ता नहीं पता लेकिन मेरा बेटा को पता है चलो मेरे साथ। देव और मोहन उसके पीछे चले गये। वहाँ पर आदिवासी का बच्चा था वह पत्थर से खेल रहा था। आदिवासी ने अपने बच्चे को बोला ये दोनों के गाँव छोड़ दो लड़का उठा और वह जंगल के रास्ता गाँव छोड़ आया इससे यह पता चलता है की कोई दूसरा नहीं होता सब अपना ही होता है।

यादें डाँटों की

नव्या कुमारी, 8A

आज बहुत याद आ रही थी उस आवाज़ की
जो पूछने की बजाय से डांटती थी।
क्यों नहीं वक्त पर खाना खाती
इस चीज़ पर पहले टोकती फिर खिलाती थी।

डांटती थी कि क्यों नहीं सोती जल्दी,
फिर खुद पूरी रात जगाकर मुझे गोद में सुलाती थी।
खाकर जाना दही-शक्कर,
ये बातें मुझे ~~बता~~ बताती थी।

खुद घूम के पूरा घर,
पैर मेरे दबाती थी।
कहती थी इधर आ, नहीं तो मारूँगी,
फिर मुझे मनाती थी।

बोलती थी "मुझे" कुछ नहीं चाहिए,
पर मेरे लिए पूरा आंगन सजाती थी।
बीमार होती तो पहले ताने देती,
फिर दवाई भी खिलाती।

कहकर भगवान से, "हे राम, ये क्यों नहीं समझती?"
फिर मुझे सिखाती थी।
आज बहुत याद आ रही थी उस आवाज़ की
जो पूछने के ~~बा~~ बजाय डाँटती थी।

मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है

Afreen Khan & Alfiha

एक बार की बात है एक गाँव में दो दोस्त रहते थे। एक का नाम रहिम एक का नाम रालिशा था। रहिम काफी धनी था और रलिसा ना ही गरीब था ना ही अमीर। दोनों दोस्त काफी-काफी दिनों से यरूसलम की यात्रा पे जाना चहते थे। लेकिन कुछ कारन कि वजह से नहीं जा पा रहे थे। कुछ दिन बाद वह यरूसलम की तीर्थ यात्रा पे चले जाते है। रास्ते में उन्हें एक गाँव दिखता है। उस गाँव में महामारी छाई हुई थी। वह एक घर में जाते है जहाँ एक लाचार और बिमार औरत बिस्तर पर अधमरी हालत मे थी। उसके पति की भी कुछ ठीक हालत नहीं थी। बच्चे भूख से रो रहें थे। इस नजारे को देखने

के बाद एलिशा ने वही सोचने का
सोचा लेकिन एफिम वहाँ से भाग गया
यरूसलम के लिए। एलिशा वहाँ रह कर
पूरी घर की सफाई की, बाजार से
खाने-पीने का सामान लाया और खाना
बना कर के सारे घर वालों को दिया
कुछ दिन वहाँ रह कर उसकी देखभाल
की और अपना सारा पैसा उनलोगों की
देखभाल में खतम कर दी। फिर वह वापस
अपने घर के लिए निकल गया। दूसरी तरफ
एलिसा यरूसलम पहोंच ही नहीं पाया
उसका सारा पैसा चोरी हो जाता है।

जैसी करनी, वैसी भरनी

आदित्य अंश - आठ

एक लड़का था जिसका नाम था बन्टू, उसके पिता वाल्मिकी उसके असली पिता नहीं थे दरसल ये बात जब वाल्मिकी ने एक प्राईवेट कंपनी में काम करना शुरू किया था उसका एक दोस्त था जो वाल्मिकी के साथ उसके स्कूटर पे काम करने जाता था पर उसके दोस्त को कंपनी के मालिक की बेटी से प्यार हो गया और उसकी उससे शादी हो गई, इससे वाल्मिकी को बहुत जलन हुई कि वो अभी तक नौकर के तरह क्यूँ काम कर रहा था, एक इत्तेफाक हुआ कि वाल्मिकी और उसके दोस्त दोनों को एक ही दिन बेटा हुआ, तो जो वाल्मिकी अपने दोस्त के बेटे को मिलने गया तो वो और उसकी माँ दोनो सो रहे थे, वहाँ एक नर्स आई, दोनों को लगा की बच्चे का देहांत हो गया, तब वाल्मिकी ने नर्स से कहा कि इसके जगह मेरे बेटे को रख दो तो वे उस बच्चे को लेकर निकले तो उस बच्चे की नींद खुल गई तो नर्स ने कहा कि इसे वापस रख देते हैं पर वाल्मिकी अपनी जलन के वजह से कहा कि नहीं, ये मेरा बेटा बनेगा, तब नर्स ने उसे रोका, वो उस समय कॉरिडोर मे थे, तो वाल्मिकी ने नर्स को धक्का दिया और वो नीचे गिर गई और सिरहियों से सबसे निचे पहुँच गई और वो कोमा में चली गई, और इस तरह उसने बच्चे बदल दिए, तो उस अमीर आदमी का बेटा वाल्मिकी का बेटा बन गया और वही बन्टू है, जब वो 22 साल का था तब उसने एक कंपनी में काम लिया और वो उस अमीर आदमी से मिलने गया तब उसने देखा कि वो आदमी घायल पड़ा था, वो उन्हे हॉस्पिटल लाया और वहाँ वो उस नर्स से मिला, उसने बंटू को सब सच बताया और वहाँ बंटू के असली नाना ने ये सुन लिया

उसने ये सुन लिया तो उसने बंटू को अपने घर बुलाया
और उन्होंने वालिमकी के ऊपर केस किया और
उसे उम्र कैद हो गई और उसका बेटा
और उसका परिवार अनाथ हो गया और
उनका भूख और बिमारी से
देहांत हो गया, और इस तरह बंटू को उसका
परिवार मिल गया।

बूढ़ी पृथ्वी का दुख

Anushka Kumari - 8 Beta

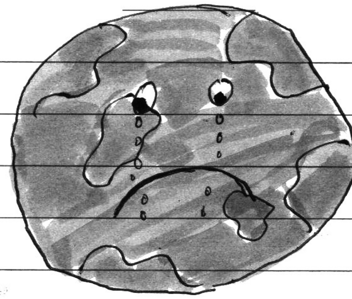

क्या तुमने कभी सुनी है सपनों में
चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें

बचाव के लिए पुकारते हजारों- हजारों हाथ?

क्या, होती है तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी

रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशी धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी
देवता को अर्घ्य?

यह कैसे होगा?

कोमल कुमारी दाँगी - VIII C

यह कैसे होगा?
यह क्यों कर होगा?

नई-नई सृष्टि रचने को तत्पर
कोटि-कोटि कर-चरण
देते रहें अहरहे स्निग्ध इंगित
और मैं अलस-अकर्मा

पड़ा रहूँ चुपचाप।
यह कैसे होगा?
यह क्यों कर होगा?

अधिकाधिक योग-क्षेम
अधिकाधिक शुभ-लाभ
अधिकाधिक चेतना

कर लूँ संचित लघुतम परिधि में।
असीम रहे व्यक्तिगत हर्ष-उत्कर्ष।
अकेले ही सकुशल जी लूँ सौ वर्ष?

यह कैसे होगा?

यह क्यों कर होगा।

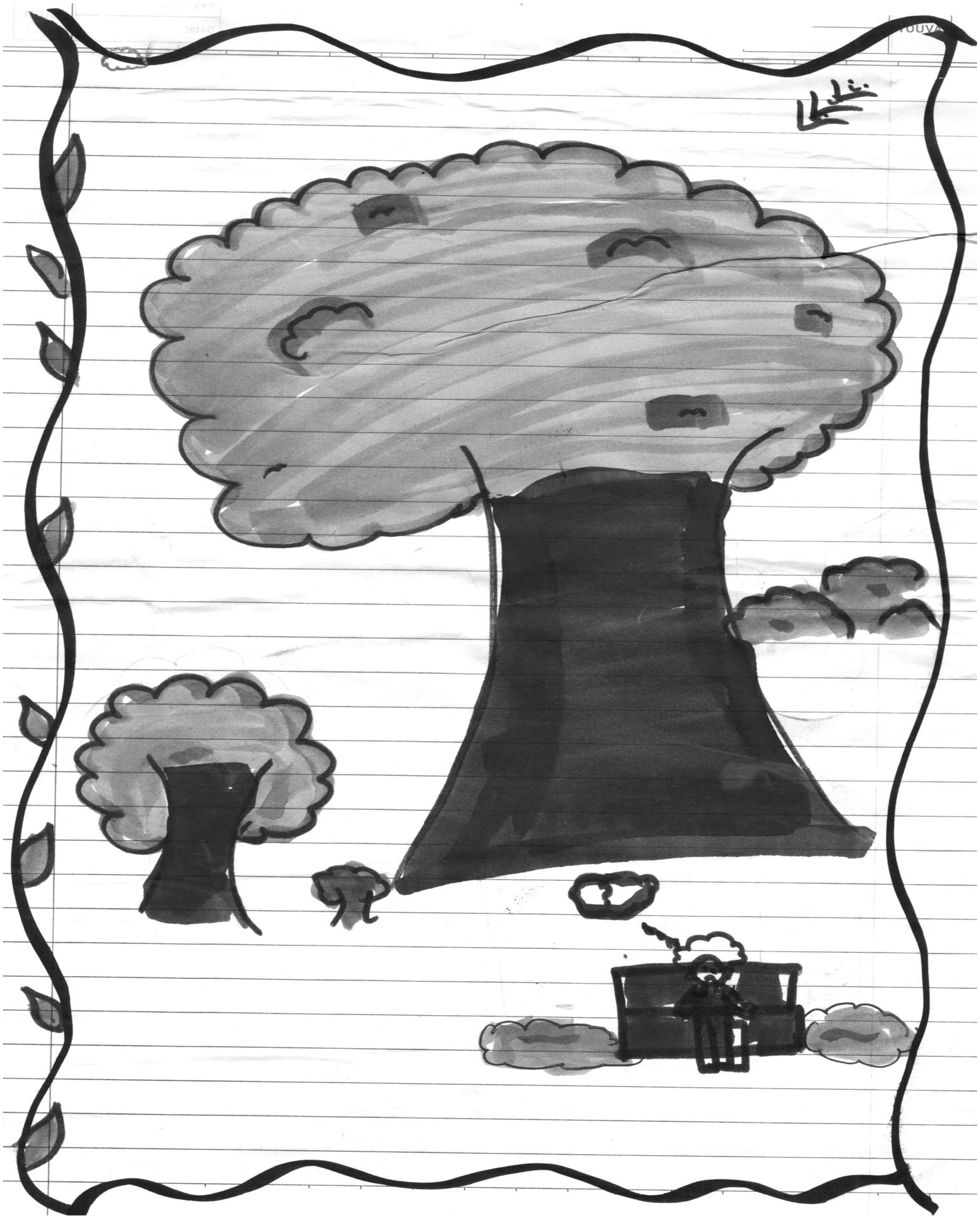

आगे बढ़ो

संस्कृति गुप्ता - गाा बीटा

हर दिन सोचती
कुछ नया करू,
हर लम्हें को रोकति
ताकी उनसें कुछ कहू ॥

चाहें मैं रोति
या फिर उछलति,
दुनिया की बातों को सुनति
तो ऐसा लगता की सिर्फ मैं खोती ॥

दुख - सुख तो सिर्फ दरिया हैं
उसमें चलना तो रहता हैं,
चाहें पत्थर को तोरना हों
या फिर गुलाब पे सोना हों ॥

दुनिया का यहिं उसुल हैं
दुविधा हो या सुविधा,
रहना तो सीखना होगा
हर कठिनाई से लड़ना होगा ॥

आन - बान - शान करों
भविषय में आगे बढ़ो,
लोग - जो कहते हैं कहने दो
मुशकीलों सें कभी ना डरो ॥

संगति का असर

ऐश्वर्या गौरव -VIII B

किसी समय एक तरुवर ऊपर चतुर काक एक रहता था,
सरलचित बतख भी एक उसकी छाया मे पलता था।

पक्षी राज ने दिया निमंत्रण पक्षी गणों को एक समय,
चतुरकाक के संग चला वह सरलचित बतख निश्चय।

कहीं राह में गोपदधी अपनी मटकी लिए हुए जा रहा था।
लालच वश में कौआ दही को उड़-उड़ जा कर खाता था।

आहट पा कर देखा गोप ने मुड़कर देखा खड़े-खड़े,
तो उसके पीछे वे दोनों कौआ, बतख दिख पड़े।

झट मटकी रख चला मारने कौआ उड़कर भाग गया,
निरपराध बतख का केवल गोप हाथ से प्राण गया।

दुर्जन की संगति करने से नर क्या-क्या फ़ल पाता है,
कौआ बतख गोप कथा से साफ़ समझ आ जाता है।

महँगाई की समस्या

Ragad, 8B

संकेत बिंदु > महँगाई, निवरण प्रणाली, दोष प्रभाव।

महँगाई का अर्थ है, दैनिक उपयोग की आवश्यक वस्तुओं का उचित मूल्य पर न मिलना। वस्तुओं का मूल्य प्रतिदिन ही बढ़ते जानों महँगाई है। यह एक कटु यर्थाथ है कि सुरसा के मुँह की तरह मूल्य वृद्धि का घेरा निरंतर बढ़ता ही जा रहा है। इस कारण जनसामान्य दूसरे शब्दों में, मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग को अपने को जीवित रखने के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ रहा है। रात-दिन परिश्रम की चक्की में पिसते रहने पर भी वस्तुएँ उसकी पहुँच से बाहर होती जा रही हैं। विलासिता की वस्तुओं की बात दूर रही ? आज रोटी, कपड़ा मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की वस्तुएँ ही इतनी महँगी हो गई हैं और होती जा रही हैं। कि गरीब आदमी तो क्या, अच्छा भला मध्यमवर्ग का व्यक्ति भी उन तक नहीं पहुँच पाता।

पानी का महत्व

Anshika Kumari-8 Beta

मैं हूँ पानी, मैं हूँ जीवन की रानी
मैंने ही जीवन बनाया
मैंने ही जीवन सजाया है
मैंने ही जीवन बचाया है

मैं हूँ पानी, है मेरी कई कहानी
अभी भी मुझे है कई जीवन बचानी
समझती हूँ मैं सबकी बात
मगर कोई क्यों नहीं देता मेरा साथ?
~~मैं हूँ प~~
मैं हूँ पानी, मैं नहीं करती किसी की हानि
मैं हूँ पानी ...

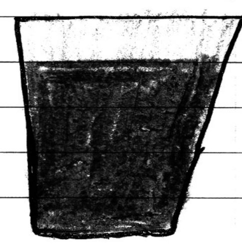

माही

अक्षिता दिवाकर, 8 B

एक बार की बात है, माही अपने दोस्तों से मिलने दूसरे गाँव जा रही थी। माही को उसके दोस्तों का फोन आया था। उसका जन्म दिन था। माही उनके लिए तोहफे में बैट और बॉल लेकर जा रही थी। उनके गाँव के बिच एक नदी है। उसे पार करने के लिए माही ने एक नाव की मदद ली। जब माही नदी पार कर रही थी तो उसे एक मगरमच्छ मिला। जैसे ही वह माही के पास आया, उसे खाने के लिए अपना मुँह फाड़ा। तभी माही के पास जो बैट था, जिसे वह अपने दोस्तों के लिए तोहफे में ले जा रही थी वह उसने मगरमच्छ के मुँह में फँसा दिया। फिर मगरमच्छ परेशान होकर चला गया। माही ने नदी पार कर ली। उसने कहा कि, "मेरे पास केवल बॉल है, बैट तो मगरमच्छ के पास ही रह गई।"

पढ़ाई की इच्छा

तनिष्का मिश्रा, 8 B

एक लड़की थी भूखी-प्यासी
खाने की उमीद ज़रा सी,
हारी थी वह जीवन से
पर टूटी न वह मन से।

एकदिन उस ने किताब देखी,
मगर समझ ना सकी वह क्या थी
सुन-समझकर कर समझ में आया
दोस्त हमारी वह पक्कि थी।

पढ़ना जाना, लिखना जाना,
जाना गणित, विज्ञान का ज्ञान
पढ़ाई से हो सकती हैं कठिनाईयाँ पार
यह जाना उसने इस बार।

अज्ञानी का जीवन है,
जैसे दीप बिना ज्योती के,
धन आता है विद्या से
यह जाना छात्रा ने।

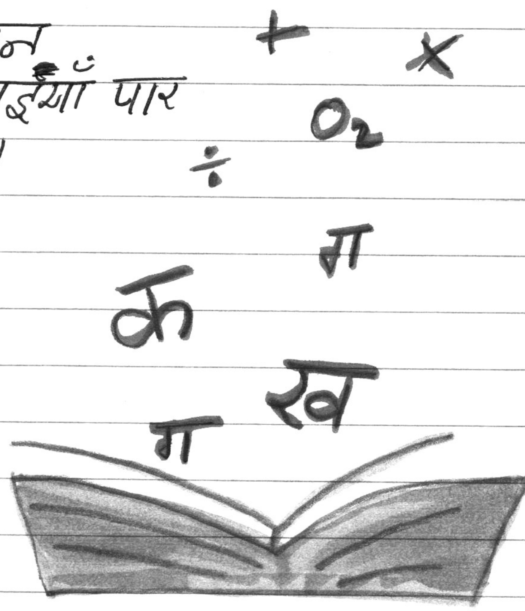

आंख

Ayaan Khalid, 8 (B)

इंसान जिते हैं और मरते हैं
इस धर्ती पर ही रहते हैं।
कोई कहता है यह भगवान,
कोई कहता यह तो सिर्फ विज्ञान है।
कभी यहाँ होते पर्लय हादसे कभी
होता है अतंकवाद।
क्यों है इस धर्ती पर इतना दर्द
जब इतना प्यार करता है भगवान।
यहाँ होती है धर्म के नाम पर नफरत
क्या यही चाहते हैं अल्लाह और भगवान।
अगर ऐसा है तो,
नहीं चहीए ऐसा अल्लाह और भगवान।

लड़का - लड़की एक समान

अंशिका राज, '8B'

भूमिका नारी: प्राचीकाल में नारी: आधुनिक काल में निष्कर्ष। नर के 'अभाव में नारी का जीवन' अपूर्ण है। तो नारी के अभाव में नर का अस्तित्व कुछ भी नहीं है। रही समानता की बात तो यह कार्यक्रम के अनुसार बदलती रहती है। लड़का - लड़की शारीरिक रूप से एक-दूसरे से भिन्न हैं। लड़का शारीरिक शक्ति की दृष्टि से लड़की से अधिक शक्तिशाली है जबकि गुणों की दृष्टि से देखा जाए तो 'नारी अधिक समर्थ है। नारी में प्रेम, त्याग एवं सहानुभूति आदि के गुण पुरुष की अपेक्षा अधिक होते हैं। प्राचीकाल में भारत में लड़का - लड़की को समान अधिकार प्राप्त थे। उस समय नारी को गृहलक्ष्मी सहधर्मिणी आदि उनके संज्ञाओं से अभिहित किया गया था। पर अब लड़का - लड़की के समान हैं।

पानी

Furqan. 8 B

पानी को करो प्यार
जैसे की वो हो तुमहारा यार,

प्यारी होती है बैहते पानी की आवाज़
जैसे खूबसुरत होता है बाज़,

नदी का पानी होता है नीला
जैसे आम है सबसे रसीला,

पानी होता है शुद्ध
जैसे गाय का दूध,

पानी को मत करो गंदा
क्योंकि वो रखता है
तुम्हें ठंडा,

पानी को अच्छे से करो इसतेमाल
ताकी ना हो उसका बुरा हाल,

पानी होता है महत्वपूर्ण
इसलीये उसको अच्छे से
करो इसतेमाल,
ताकी भवीश्य मे ना हो बुरा हाला

मेरी सुंदर प्रकृति

MD AL HAMZA Ejaz Mallick VIII 'Beta'

मेरी सुंदर प्रकृति,
पेड़ पौधे हैं इसके पास,
जो भी चीज़ बनी हो प्रकृति से,
है मेरे घर के आस पास।

मेरी सुंदर प्रकृति
नीला आसमान, हरे पेड़ पौधे,
समुद्र का किनारा, यह सब का सौंदर्य है,
मेरा सुंदर प्रकृति।

~~पहाड़ों के मीठे फल~~
पहाड़ों की सुंदरता,
पेड़ों के मीठे फ़ल,
ये सब है उसके पास,
मेरा सुंदर प्रकृति।

हमेशा लोगों की मदद करना चाहिए।

Ankush Raj-8 B

एक बार की बात, एक जंगल दो दोस्त रहते थे। एक नाम मोहन था और दूसरे वाले का नाम रमेश था। दोनों में जमिन - आसमान का अंतर था। क्योंकि मोहन सभी लोगों की मदद करता था लेकिन रमेश नहीं करता था। इस लिए सभी जंगल वाशी मोहन को चाहते थे ना की रमेश और इसी कारन से मोहन जंगल का राजा बन जता है। और वह सब की मदद करते रहता है। लेकिन रमेश को कोई भी नहीं चाहता था।

सपनें

तलत परविन - VIII B

सपनें देखना आसान बात है,
पर उन सपनों को हासिल करना
आसान बात नहीं है।
बचपन से लेकर अब तक,
देखे होंगे हमने कई सपने
पर कहीं-ना-कहीं
कुछ मुश्किलों के कारण
टूट भी गए होंगे वो सपने।
जब हम सपने देखते हैं
तो वो अनगिनत होते हैं,
पर कुछ ऐसे भी होते हैं
जो मुमकिन नहीं होते हैं।
लेकिन जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए
हमे सपनें देखने चाहिए,
और उन्हें पाने के लिए
उन पर कायम रहना चाहिए।

'प्रकृति की सुन्दरता'

आरोही, VIII 'Beta'

इस संसार में भगवान द्वारा बनाई ~~बहुत~~ प्रकृति के बहुत सारे आकर्षक हिस्से एवं नज़ारे हैं। जैसे की- आग, पानी, सूरज की रोशनी, पेड़, फल, फूल और पत्ता नही क्या क्या। इन सारी चिजों की अपनी अलग-अलग खासीयत एवं आवश्यक काम हैं, जिनके बीना हमारा एक पल का गुज़ारा भी नहीं हैं। आग हमें खाना पकाने में मदद करता हैं, पानी हमारी प्यास बुझाने में, सूरज की रोशनी फल एवं सब्जियों को उगाने में, और पेड़ हमें सांस लेने में हमारी मदद करता हैं। यह सारी चिजें एवं बातें यह दर्शाती हैं की इनकी हमारे जीवन में कितनी आवश्यक्ता हैं। लेकीन हम मनुष्य ही हैं जो इन प्राकृतिक चिजों की जरूरत नहीं समझ पा रहे हैं सिर्फ क्योंकि हम इस सोच में रहते हैं कि यह सारी चिजें तो कभी खतम हो ही नही सकतीं। जबकी ऐसा एकदम भी नहीं हैं, जिस हिसाब से हम इन्हें बर्बाद करते हैं उस हिसाब से इन चिजों की मात्रा बहुत कम हो जाएंगी और हो सकता है कि इनमें से कुछ तो हमेशा के लिए खतम भी हो जाएं। और फिर हमारा और आगे की पीड़ीयों का जीवन बहुत ही ज़्यादा कठीन हो जाएगा। ~~इन सारी चिजों से बचन~~ लेकीन इन सारी परीस्थितीयों से बचने के लिए हम लोग अपनी प्रकृति को अपने लिए, बचाने के लिए इन चिज़ों को बर्बाद करना और वे सारी चिजें जिनसे इन्हें नुकसान हो वो करने को जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी रोकना होगा।

प्रकृति की माया

Dakshina VIII B

कितनी सुंदर है यह दुनिया,
कितनी मनोहर है यह भूमी,

कैसे बहती है यह पानी,
कैसे गाती है वह कोयल इतनी मधुर वाणी।

यह सब प्रकृति की माया,
कैसे चम-चमाता है वह तारा

कितनी सुंदर है यह दुनिया,
कितनी मनोहर है यह भूमी।

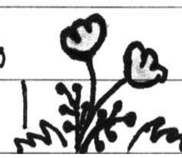

नियमों का पालन करें

मन्नतराज - VIII 'B'

नियमों का पालन करें,
जब सड़कों पर वाहन चलें।
नियमों का पालन करें,
जब सड़कों पर वाहन चलें।

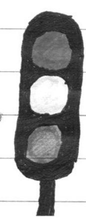

तेज़ गति से चलता वाहन,
जीवन जोखिम में आ जाता है।
भरना पड़ता है जुर्माना,
और दुर्घटना भी हो जाती है।

जन संख्या के बढ़ते क्रम से,
नियमों का विस्तार हुआ।
जगह - जगह पर पोस्टरों में,
नियमों का प्रचार हुआ।

तीन बत्तियों की टोली में,
लाल कहती तुम रुक जाओ।
पीली कहती रहो तैयार,
और हरी कहती अब चलते जाओ।

दो पहिया का मित्र हेलमेट,
कहलाता है जानो।
चौ पहिया में जब भी बैठो,
सीट बेल्ट तुम बाँधो।

जब चलो तुम वाहन से,
तो करो न मदीरा पान।
बचना है दुर्घटना से तो,
फ़ोन को दो आराम।

मेहनत करो लेकीन समझदारी से

राज डांगी - 8 B

एक दिन की बात है, एक अनीकेत नामक लड़का स्कूल गया और अपने दोस्तों से कहा की चलो हमलोग ट्रिप के लिए पैसे इखटा करते हैं। (उन्हें पूरे एक लाख रुपय की जरूरत थी) तभी अनिकेत के दोनों दोस्तों ने कहा की मेरे पास एक विचार है, तो पहले अनिकेत के अपने दोस्त अंकुश से पूछा, तो वह कहता है, कि मेरे पास 10 हजार है, और राज ने भी वही कहा।

अगले दिन वे तीनों पटना गए और उन्हों ने 20 हजार रुपए की मदद से एक मोमो का ठेला लिया और उसे रोड पर लगा दिया लेकिन उस से कोई मुनाफा नहीं हुआ तो उन्हों ने उसको बेच कर बहुत सारे उपले खरीदा और ऑनलाइन 1 लाख का बेच दिया और ट्रिप पर घूमने चले गये। और उन्हों ने एक उपला 25 पैसे में खरीदा और 10 रुपए का एक बेचा।

मेहनत नहीं करों स्मार्ट काम करो

एक दिन, राज ने अंश से कहा मुझे यह गाड़ी चलाने नहीं आती हैं, मैं ड्राईवींग क्लास लेने जा रहा हूँ। तब अंश ने कहा की तुम ड्राइवींग क्लाश क्यों जा रहे हो, तुम तो अपने घर पर हीं ड्राईवींग सीख सकते हो। राज पुछा वह कैसे ?। अंश बोला की तुम ऐसे भी ड्राइविंग क्लाश मैं 3000 खरच करोगे उस से अच्छा की तुम अपने मोबाईल पर हीं गेम खेल के सीख लो!। और मेरी गाड़ी की चला कर अभ्यास कर लो!। राज ने कहा हाँ तुम ने सही कहा। फीर अंश बोला स्मार्ट काम करो कठोर नहीं।

मेरी कविता

Piyush Bharti, 8'B'

सुंदर सा आँचल तेरा,
निंद मुझे आ जाती है।

जो भी चाहूँ मिल जाता है,
खुशीयां घर में लाती है।

सुबह - सवेरे उठकर झट-पट
सारा काम निपटाती है।

हम सब के चक्कर में खुद कुछ ना
खा पाती है।

नाम है ऐसा, गर्व से बोलूँ
यह हमारी माता है।

दोस्त या दुश्मन

Risha Kumari, 8 Beta

कभी - कभी हमें ऐसा लगता है कि मेरे मित्र ही मेरे सबकुछ है। परंतु ~~उसका~~ उनका असली रूप तभी सामने आता है जब हमे उनकी जरूरत होती है।

ऐसी ही कुछ कहानी है रीता और उसकी तीन दोस्तों की ~~दी~~ ~~दीकुछ~~ दीक्षा, मीनाक्षी और दोल की।

एक बार कि बात है गणीत का कार्य करने को उन चारो ने फैसला कीया की इस साल वो गणीत का कार्य साथ मे करेगे ~~परंतु~~ ~~उनवो जब सब उनहो~~ इसी कारण ~~वो~~ मनाक्षी के घर पर मीलते है जहाँ दीकछा, रीता को हर बात पर नीचा दीखाने लगती है जैसे की उन ~~लोक~~। लोगो के बीत गुंजक नाम की लड़की की बात चल रही थी तभी दीकछा बोलती है गुंजक ~~त~~ तो रीता से भी कम पढ़ती है, रीता ने उस बात पर ध्यान नहीं दीया फीर कुछ देर बाद वो बोलती है कि ~~[illegible]~~ रीता ~~को~~ बहुत जल्दी गुस्सा हो जाती है। उस बात को उनसब ने हँस कर टाल दीया। तभी मीनाक्षी और दीकछा ~~[illegible]~~ रीता को एक कठीन प्रश्न समझाने का कार्य दीया। परंतु रीता उसमे असफल रही। जब रीता ने वही प्रश्न ~~मनीक्ष~~ मीनाक्षी को समझाने बोला तो वो खुद मौन रहे गई। फीर सब अपना कार्य लेकर घर चले गये। अगले दीन जब

गणीत की शीकीक्षा ने उने आपना कार्य
शीखाने को बोला तो उनहोंने शीखा परंतु
रीता ने परीचय मैं थोड़ा बहुलाओ कीया
उसी बात पर गुस्सा हो शीक्षका, डील
और मीनाक्षी ने उसे बहुत बुरा बोला जब
रीता रोने लगी तब शीक्षका बोली ये तो
हमेशा ही रोती रहती है। फीर सब ~~कर~~
पढ़ाई करने लगी तभी शीक्षका रीता
को चीढ़ाते हुऐ कहती है। कि डील आग।
हम मेरे घर मीलेंगे पर रीता ने ध्यान नहीं
दीया। तभी कुछ देर बाद रीता अपनी
गणीत शिक्षिका को पुरी कथा बताई। तब
उसकी शीक्षिका उसे सुझाओ देती है कि
तुम मेरे साथ कार्य कर सकती हो। रीता
ने अपनी भोली आँखों में आसु लीए
हाँमी मे सीर हीलाया। और अपने कार्य पर
काम करने लगी। और अंत मे उसने अपनी
शीक्षिका के साथ काफी अच्छा
कार्य कीया और अपने दोस्तों को ये
समझा दीया की वो बीना उनके भी
कुछ भी कर ~~सकी~~ सकती है।

सीख → जींदगी में दोस्त
उन्ही को बनाओ जो तुम्हारे
जैसे हो वरना रीता की तरह आपको
भी रोना पड़ सकता है

पायल का सपना

Disha Sharma, 8-B

एक लड़की थी जिसका नाम पायल था उसको फोटोग्राफि का शौख था लेकिन उसके माता-पिता यह नहीं चाहते थे कि वह फोटोग्राफि करके वो चाहते थे कि वह डॉक्टर बने। फिर एक दिन पायल पार्क गई उसे एक फूल देखा जिसके उपर तितली बैठी थी फिर वह दौड़ के उधर गई और झट से कैमरा निकाली और उसकी तस्वीर खींचने लगा गई। फिर जब शाम में वह घर पहुँची उसने देखा कि उसके पिता सोफे पर बैठे हैं फिर पायल अपने पिता के पास जाके बैठ गई और उसने जो तस्वीर खींची थी वह अपने पिता को देखाने लगी और बोली "पापा-पापा देखिये मैंने कितने सुंदर तस्वीर खींचे हैं" तब उसके पिता बोलते हैं "यह सब करके तुमें कुछ नहीं मिलेगा जा के पढ़ाइ करो" फिर पायल उदास हो के चली जाती है और पढ़ने लगती है। कुछ दिन उसकी दोस्त आती है और बोलती है "पायल-पायल तुमने यह विज्ञापन देखा फोटोग्राफि का" पायल ने बोला "नहीं तो मैंने तो नहीं देखा, तुम दिखा दो" फिर पायल बोलती बोलती है "यह देखो अगर तुम इस में भाग लेती हो तो तुमें ₹20,00 मिलेंगे" तो पायल ने अपना नाम लिखवाया। फिर थोड़े दीन एक तस्वीर खींच के दे दी। और कुछ दीन बाद उसको एक मेसैज आता है कि वो जीत गई है। उसने अपने पिता को बताया कि वह चित्र तस्वीर जीत गई है तो उसके पिता ने उससे माफि माँगी।

सफलता

तनुज राज - 8 'ए'

एक छोटे से गाँव में एक लड़का रहता था जिसका नाम रोहन था। वह बहुत ही जिज्ञासु और सीखने के लिए उत्सुक था। रोहन को पढ़ाई बहुत पसंद थी और वह हर दिन नई चीजे सिखने की कोशिश करता था। उसने गाँव मे एक प्रसिद्ध विद्वान रहते थे जिनके पस दूर - दूर से लोग ज्ञान प्राप्त करने आते थे।

एक दिन रोहन ने उन विद्वान से मिलने का निर्णय किया। वह उनके पास गया और पूछा "महोदय, जीवन में सफलता का राज क्या है?" विद्वान ने मुस्कराते हुए कहा, "सफलता का राज है निरंतर प्रयास और धैर्य। लेकिन इसके लिए तुम्हें अपने अंदर की शक्ति को पहचानना होगा।"

रोहन ने विद्वान की बातों को ध्यान से सुना और उन्हें अपने जीवन में उतारने की कोशिश की। वह हर दिन कड़ी मेहनत करता और अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ता गया। लेकिन रास्ते में कई चुनौतियाँ आई, कई बार उसने हार मानने की सोची लेकिन वह नही हारा।

धीरे - धीरे रोहन ने अपने क्षेत्र में बहुत नाम कमाया और लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया। उसकी कहानी ने दूसरों को प्रेरित किया कि वे अपने सपने को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करें।

एक दिन रोहन ने अपने गुरु से फिर पूछा "गुरुजी मैंने बहुत मेहनत की लेकिन अभी भी मुझे लगता है कि मुझे बहुत कुछ सीखना है। आगे क्या करना चाहिए गुरुजी ने कहा। "ज्ञान का सागर अनंत है, और हमें जीवन भर सीखते रहना चाहिए। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है कि तुम अपने ज्ञान का दूसरों के साथ बाँटो।"

रोहन ने गुरुजी की बातों को समझा और अपने ज्ञान को दूसरों के साथ बाँटने का निर्णय किया। वह एक स्कूल खोलकर बच्चों को पढ़ाने लगा। उसकी मेहनत और समर्पण ने गाँव के कई बच्चों की जिंदगी बदल दी।

रोहन की कहानी हमें सिखाती हैं कि सफलता के लिए निरंतर प्रयास, धैर्य, और दूसरों के प्रति सेवा भाव आवश्यक हैं। उसकी कहानी हमे प्रेरित करती है कि हमें अपने सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करें और अपने ज्ञान को दूसरों के साथ बाँटने का प्रयास करें।

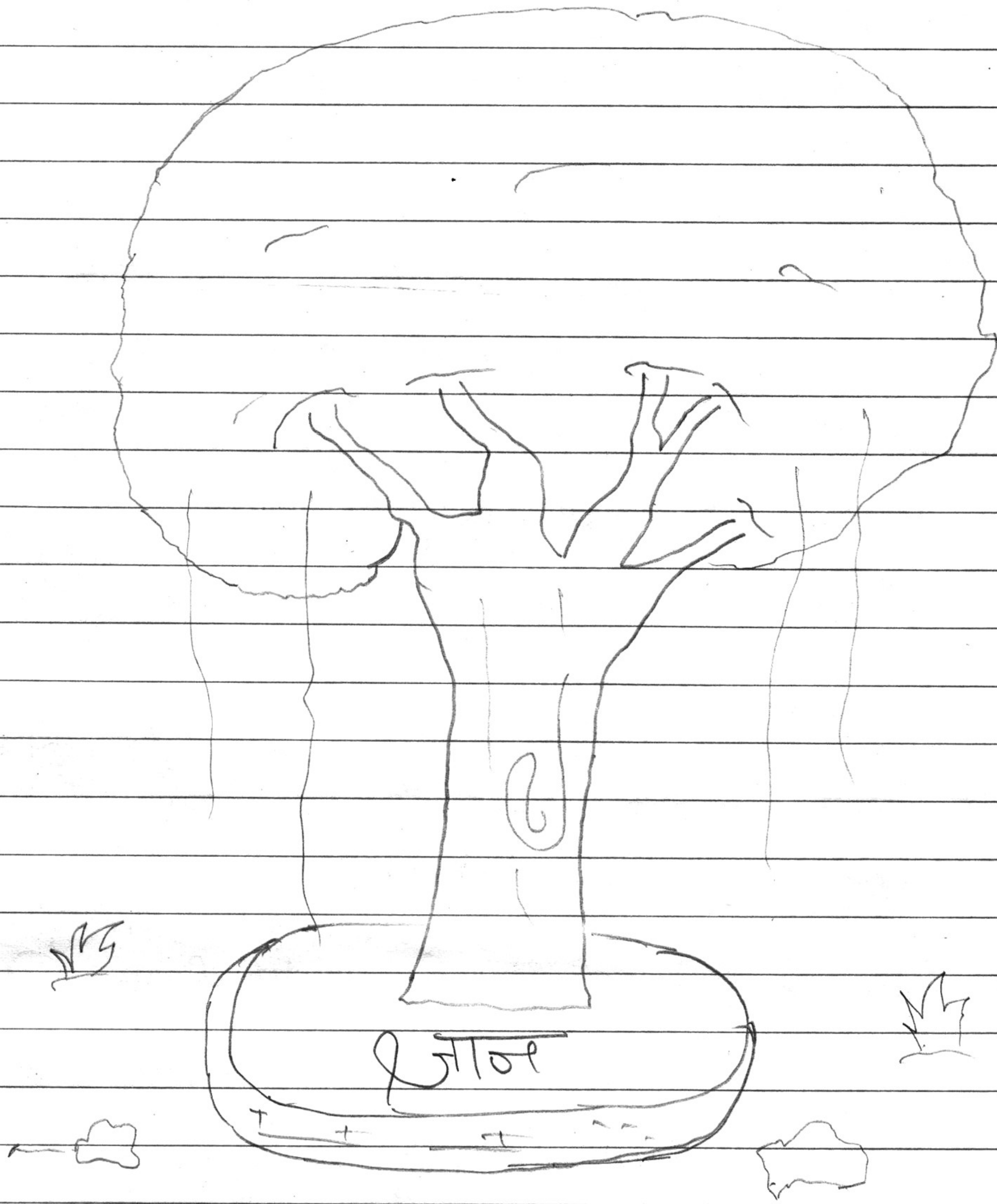

ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती।

ईश्वर के दर्शन

आर्यन राज, 8 'ज'

एक समय की बात है। एक गाँव में चार चोर रहते थे - मंगु, चंगु, टीकु और रिंकी। वे चारों मिलकर चोरी करते थे। एक दिन उन्होंने सोचा की वे गाँव के मंदिर में चोरी करेंगे। उस मंदिर के पुजारी थे रघुराम जी दास उनका एक बेटा था सुंदर वह नाटकों मे काम करता था। जब चारों मंदिर के पास पहुँचे तो देखा की पुजारी जी सोये हुए हैं और भगवान पहरा दे रहे हैं, पर वे पुजारी का बेटा था जो ईश्वर के भेस मे था और नाटक से अभी - अभी लौटा था। चारों चोर यह देखकर डर गए और वहाँ से भाग गए, सुबह वे पुजारी जी के पास गए और उनसे माफी माँगने लगे। पुजारी जी ने बोला कि तुमलोग ये क्या कर रहे हो, इस पर चारों ने पूरी घटना बताई, यह सुनकर पुजारी जी को लगा की अरे। मैं इतने सालों से इस मंदिर मे सेवा कर रहा हूँ, पर भगवान ने मुझे तो कभी दर्शन नहीं दिए पर इन चोर, पापीयों को दे दिया। आज से मैं भी इनके साथ चोरी करूँगा। उन्होंने यह बात चोरों से कही, पर चोर बोले की ये आप क्या कह रहे है, आप संत पुजारी, आप चोरी करेंगे, पुजारी जी बोले हाँ करूँगा। पुजारी जी के जिद के आगे चोर हार गए और उन्हें अपने साथ आने की अनुमति दे दी।

अगली रात वे लालप्रसाद सिंह के घर गए, उन्होंने योजना बनाई की वे गढा कर के उनके घर मे जाएंगे सभी चोर इसमे मे माहिर थे, वे काम मे जुट गए लेकिन पुजारी जी को कठिनाई होने लगी, उन्होंने कुछ सोचा नहीं और सिधा उसके घर के दरवाजे को बजाने लगे। जब लाल प्रसाद ने आवाज सुनी तो वे बाहर आया, उसने पुजारी जी से पुछा "तुम कौन हो? और दरवाजा क्यों बजा रहे हो?"

पुजारी जी बोले "क्या आप मुझे फावड़ा दे सकते है"। उसने बोला आप उसका क्या करोगे, पुजारी जी ने कहा कि हम आपके घर चोरी करने आए थे और अंदर आने के लिए गढा खोद रहे थे इसलि चाहिए। इतना सुनते ही लाल प्रसाद चिलाने लगा और अपने पड़ोसियो को बुला लिया। उसकी चिख सुनकर चोर वहा से भाग गए पर पुजारी जी फस गए सबने उनहे बहुत पीटा, फिर कुछ लोगो ने कहा इन्हें जाने दो, अरे! इन्होने तो बता दिया की चोर है इसी बजह से तुम्हारे घर चोरी नही हुई सबलोगो ने उन पर दया की और उनहे छोड़ दिया। वहाँ से छुटकर के वापस चोरो के पास गए, वहा चोर पूरे गुस्से मे थे उन्होने ने पुजारी जी को खुब सुनाया। और अपने साथ ले जाने को मना किया, पर पुजारी जी जीद पर अड़े थे। इसलिए चोरो को न मन होते हुए भी उन्हे ले जाना पड़ा।

अगली जगह थी कालु हलवाई के घर। उसके घर मे रोज लड़ाई होती थी। उसका एक भाई थालु हलवाई और माता जी सुंदरी हलवाई उसके पास एक गाई थी बसंती, वे बहुत दुध देति थि, फिर भी उन दोनो की पत्नीयाँ रोज लड़ती थी की दुध किसने खतम किया, दुध - तु पि गई। उस रात उन दोनो भाईयो की माता जी कोठरी मे सोई थी। जब चारो चोर उसके घर गए तो भाग्य से उन्हे उसके घर का दरवाजा खुला छोड़ दिया; तो तीन चोर घर के अंदर गए और पुजारी जी और एक चोर कोठरी मे। वहाँ जाकर सभी चोर सामान चुराने मे लग गए पर पुजारी जी को वहा दुध मिला और चुल्हा उन्होंने दूध को उबलने के लिए छोड दिया फिर अपने आप से बोलने लगे कि हे ईश्वर अगर चीनी और चावल मिल जाए तो-तो आपको भोग लगा जाए।" | फिर वे चीनी और चावल ढूंढने चला गए।

भाग्य से उन्हें चीनी और चावल मिल भी गए। जब वह खीर बनाने लगे तो जो बूढ़ी औरत थी वे खर्राटे ले रही थी, उसके दाँत भी नहीं थे तो उसके मुँह से आवाज निकल रही थी "फू-फू"। यह सुनकर पुजारी जी को लगा की बूढ़ी औरत जागी हुई है और उसे देख रही है; उसने कहा कि "अरे! मामा शांत रहो, खीर बन जाये दो।" पर वह बूढ़ी औरत फिर से फू-फू किया, बाबा फिर वही बात बोले। ऐसा 5-6 बार हुआ, अंत में उन्हें गुस्सा आया और उन्होंने गरम खीर बूढ़ी औरत के मुँह में रख दिया। बूढ़ी औरत को जलन महसूस हुई और वह चिल्लाने लगी उसका चिल्लाना सुन सभी घर वाले और आसपास के लोग आ गए और वे तीन चोर पकड़े गए पर वे चोर जो कोठरी में था वे खटिये के नीचे छुप गया और पुजारी जी छत पर। जब उनकी बहुरे आयी और ये दृश्य देखा तो कहने लगी अब पता चला दूध क्यों खत्म हो जाता था। अरे! हाँ बुढ़िया अकेले-अकेले खीर खाती है। तो उसने बोला- कि अगर मैंने खीर-खाया होगा तो ऊपर वाला जाने-वे बार-बार यही बोले लगी तो पुजारी जी बोले पर ऊपर वाला न नीचे वाले भी जाने तो सभी हक्का-बक्का हो गए और उन दोनों को पकड़ लिया, फिर उन्हें मारा और उन्हें हवलदार के हाथ कर दिया पर जाते वक्त वे बोले कि बड़ी मेहनत से खीर बनाया है ले जाने दो तो लोगों ने उन्हें ले जाने दिया। वहाँ जाकर चोरों ने उन्हें मारा और मिलकर ~~खीर~~ खीर खाया।

स्कूल के दिन

HARSHIT KRISHAN RAJ, VIII G

स्कूल के वो दिन, जब
हमें पढ़ाई से कम
लेकिन दोस्तों के साथ
मस्ती करने में ज्यादा मजा
आता था।

दोस्त लोगों को परेशान
करने में मजा आता था
और ऐसा नहीं थी की
हम लोग पढ़ने में खराब
थे हम सभी पढ़ाई में
ठीक-ठाक थे।

एक दिन हम सभी घर
पर बिना बताए कहीं
दूर घूमने चले गए और
उसमें भी हमने बहुत
मजा किया लेकिन
वहां पर हमारे एक दोस्त
के रिश्तेदार मिल गए
और उन्होंने उसके
पिता को बता दिया।

और अब वहाँ हमलोग बात नहीं कर
पाए !!! . . . .

लुप्त हो गई लड़कियाँ

संस्कार आर्या, आठ 'Gamma'

एक समय की बात है एक राज्य था। जिसका नाम कोयलपुर था। कोयलपुर बहुत सुंदर और साफ़ था। कोयलपुर के बगल में कबूतरपुर था। वहाँ से कुछ लड़कियाँ कोयलपुर घूमने गई। कोयलपुर जाते-जाते रात हो गई। लड़कियाँ होटल में रूम लेकर वहाँ सो गई। कल सुबह वह उठकर पहाड़ों की वादियों में घूमने के लिए गई। पहाड़ों में उन्होंने खूब मज़े किए। पहाड़ों की एक गुफा में एक साधु तपस्या कर रहे थे। लड़कियों ने उस गुफा में जाकर साधु को परेशान करने लगी गाना गाती तो कभी चिल्लाती साधु क्रोध में आगए। क्रोध में आकर उन्होंने बोला दुष्ट लड़की तूने मेरे सौ साल के तपस्या को भंग किया है। जाओ मैं तुझे श्राप देता हूँ कि अब धरती से लड़कियाँ गायब हो जाएँगी। लड़कियाँ डर गई। उन्होंने साधु से माफी माँगी पर साधु ने कमंडल से जल लेकर मंत्र ~~पढ़ पढ़~~ पढ़कर उनपर फेंक दिया। उसी समय धरती से लड़कियाँ गायब हो गई चारों तरफ अफरा-तफरी फैल गई। सारी लड़कियाँ उसी वक्त गायब हो गई। अखबार, टी.वी सब जगह

वहीं ~~खबक~~ खबर फैल गई। सब लोग घबरा गए की अब बच्चों को जन्म देने वाली नारीयां ही नहीं हैं तो अब ये दुनिया कैसे चलेगी। पर कुछ लड़कियां अनतरीक्ष यात्रा करने गई हुई थी। जब वो अनतरीक्ष से लौटी तो केवल विमान था। लड़कियाँ नहीं। बहुत छान बिन करने पर पता ~~ला~~ चला कि एक लड़की जो उनके साथ गई हुई थी। घूमने, उसने यह बात अपने माता - पिता को बता दि दी थी। उसके माता पिता ने सबको ये बात बताई। फिर कुछ लोग वही छान बिन करने के लिए गए। वहाँ साधु से मिलकर लोगों ने बोला - हे गुरु, देव हमे क्षमा करें कृप्या लड़कियों को वापस ले आए। साधु उठे, उन्होंने कहा तुम्हारी बेटियों के चलते मेरी सौ साल की की तपस्या भंग हो गई है। मैं ~~तुमहे~~ तुम्हे कभी माफ़ नहीं करूंगा। लोगों ने कहा - हे गुरुदेव उन लड़कियों के चलते सारी नारीयों को आपने गायब क्यों कर दिया। गुरुदेव को भी लगा उन लड़कियों के चलते बाकि सब दंड क्यों झेले। गुरुदेव ने कहा ठिक है मैं सब नारीयों को वापस लाता हूँ। और उन लड़कियों को अब मनुष्य से बदलकर जानवर में बना दूंगा। लोगों ने कहा ठिक है गुरुदेव। गुरुदेव ने सब पहले जैसा कर दिया और कुछ लड़कियों को कुत्ता बना

दिया। और कुछ लड़कियों को बिल्ली
अब पहले जैसा हो गया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती
है कि हमें किसी के साथ मज़ाक
नहीं करना चाहिए। मज़ाक का फल
भारी पड़ जाता है।

राजा का घमंड

Pratyush Raj - 8 'C'

एक साम्राज्य में एक राजा रहते थे उनका
नाम रमण था वो एक बहुत प्रसिद्ध राजा थे।
उनके पास इतना धन था कि वो अपने धन पर
घमंड करने लगे वे अपने दरबार में एक
तराजू रखते थे वे अपने दरबार में एक
खेल रखते थे उसमें राजा अपनी तराजू
रखते थे और दूसरा व्यक्ति तराजू पर भारी
वस्तु रखता था और राजा अपना स्वर्ण मुद्रा
रखते थे राजा का यह नियम था कि
जो व्यक्ति तराजू को तोल दे वो उसका
दरबार हो जाएगा। एक दिन एक सब्जी वाला
राजा के दरबार में गया और प्रतीयोगिता में
भाग लिया परंतु सब्जी वाला जितना भी
वजन डालता उससे ज्यादा राजा अपने
स्वर्ण मुद्राएँ रखते इसी तरह वह अपने आप
को बड़ा मानता और घमंड में रहता कि
उससे ज्यादा धनी आदमी कोई नहीं है।
इसी तरह बहुत व्यक्ति आते गये और
निराश होकर गये। एक दिन दरबार में
एक बूढ़ा व्यक्ति "राजा" कहते - कहते आया
वह अपने साथ केवल नाखून के बराबर
एक हड्डी लाया था राजा यह देखकर
जोर से हँस पड़े राजा बोले "यह क्या है?
ये नाखून के बराबर एक हड्डी मेरा धन के
बराबर होगी" ठीक है तराजू पर रखो इस
हड्डी को राजा ने ऐसा बोला। बूढ़ा व्यक्ति
अपना हड्डी रखा और जैसे ही राजा ने स्वर्ण
मुद्रा रखते गये तराजू तो टस-से-मस न
हुआ। राजा क्रोधित हुए और मंत्री से बोले

जाव पूरे के पूरे स्वर्ण मुद्रा ले आव
राजा स्वर्ण - मुद्रा रखते गए परंतु तराजू
टस से मस ना हुआ यह देखकर राजा
दंग हो गया बुढे व्यक्ति को पूरा सम्राज्य
दे दिय। और राजा रोड पर आ गया।
राजा का अहंकार उसे ले डूबी इस कहानी
से हमे यह सीख मीलती है छोटे व्यक्ति
कभी कम नहीं समझना चाहिए और उसके
दशा को देखकर कभी मज़ाक नहीं उड़ाना
चाहिए।

एक नई सुबह का आरंभ

Ayush Ray, 8 'Gamma'

मोहन नाम का एक बैरागी अपने हाथों से बनाए हुए ऊनी कपड़े बेचने के लिए रामपुर नामक गाँव में गया। वह उन कपड़ों को बेचने के लिए लोगों के घरों से गुजरते वक्त बोलता- "कपड़े लेलो गरम-गरम ऊनी/मुलायम कपड़े ले लो। परंतु इस ठंड के मौसम में कोई बाहर नहीं आता। कुछ दूर चलने के बाद उसे एक बाबा मिले उन्होंने उससे कहा- "तुम इतनी ठंड में बाहर क्या कर रहे हो?"।

मोहन ने कहा:- "बाबा, मैं इस कपड़ों को बेचना चाहता हूँ परंतु इन्हें लेने के लिए कोई बाहर ही नहीं आता अगर यह इस ठंड न बिके तो मैं अपने परिवार को भोजन नहीं दे पाऊँगा

बाबा ने कहा:- "मैं, तुम्हें एक उपाय बताता हूँ अगर तुमने यह उपाय से कपड़ों को बेचने में सक्षम हुए तो उन पैसों में से पचास रुपए तुम दान कर देना।

मोहन ने बोला- "ठीक है बाबा, परंतु उपाय क्या है?"

बाबा ने बोला- "तुम्हें कल से एक नई सुबह का आरंभ करना है तुम्हें लोगों के घर के सामने जाकर गरम कपड़े लेलो नहीं बोलना है। तुम्हें बोलना है- "आओ-आओ अब ठंड से छुटकारा पाओ इसे लेने से कभी ठंड ना लगेगी" इतना बोलकर बाबा चले गए।

मोहन कुछ बोलना चाहता था पर बाबा न रुके और चले गए।

अगले सुबह मोहन ने ठीक वैसा ही कहा जैसा बाबा ने उसे बताया और ऐसा बोलते ही लोग अपने घर से बाहर आने लगे और मोहन के कपड़े बिकने लगे उस दिन मोहन ने एक हज़ार के कपड़े बेचे। उसने बाबा का बताया हुआ सारा काम किया उसने उन पैसो मे से पचास रुपए दान भी किए। उस दिन के बाद से मोहन ने बाबा की दी हुई सीख हमने अपनाई। वह अलग-अलग गाँव। शहर जाता और बाबा के द्वारा समझाई मंत्र/बातें बोलता और साथ-ही-साथ उनमे से कुछ पैसे दान भी करता इस तरीके से उसने एक नई सुबह का आरंभ किया।

कहानी का भाव :- लोग हमेशा कुछ नई चीजों की तलाश मे रहते हैं उन्हें वो दो और अपना समान बेचो। और साथ-ही-साथ दान भी करो।

बच्चों की प्यारी माँ

उमर हुसैन, 8 "Gamma"

मेरी माँ प्यारी है
सारे जग से न्यारी,
हँसती हैं तो लगता है
खिले फूल की रानी है।

ममता की वह मूरत है
सुन्दर उनकी सूरत है
जब वह रहती मेरे सात
पीड़ा भूल आ जाए सुख पर
रास।

और किसी को
हो न हो
मुझे मेरी माँ
की जरूरत है।

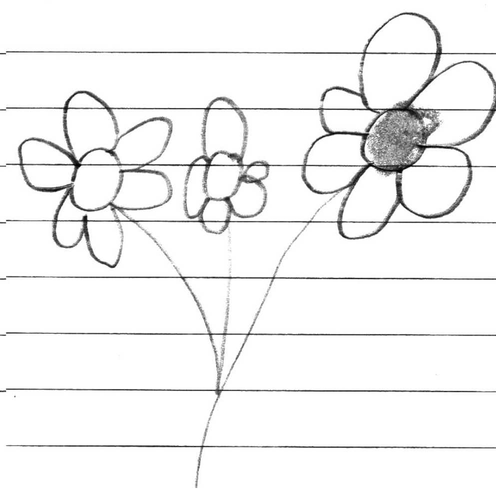

कर्म का फल

जितेश कुमार सिन्हा, VIII 'ज'

यह कहानी पटना जिले के एक छोटे से गाँव अकबरपुर कि है। जहाँ दो दोस्त बहुत ही अच्छे मित्र थे। एक का नाम सुरेश था और दुसरे दोस्त का नाम मुकेश था। सुरेश दसवी के बाद वह बहुत परिश्रम कर के एक दुकान खोलता है। वही मुकेश दसवीं के बाद खेती मे लगाया। सुरेश बहुत मेहनत करता और उसकी दुकान बहुत अच्छी चलने लगी उसने बहुत सारे जमीन खरीदा लेकिन मुकेश उसकी तरक्की देखकर जलने लगा। वह उसे जमीन खरिदने से मना करता और फालतु पैसे खर्च कराता। मुकेश ने सोचा ऐसे यह और भी तरक्की करेगा। उसने सुरेश के ही दुकान मे काम करने का सोचा। वह सुरेश को बोलता कि मुझे अपनी दुकान मे काम के लिए रखलो। सुरेश हाँ! बोल देता है, पर उसे उसकी चाल को नही समझ पाया। जब भी को सुरेश दुकान पर नही रहता तो मुकेश आय ग्राहक को सामान नहीं है बोलकर दुसरे दुकान मे भेज देता। वह ऐसा ही करता जब सुरेश दुकान पर नही रहता, तो वह सारे ग्राहक को भगा देता। धीरे-धीरे सुरेश की दुकान नहीं चलने लगी। उसे बहुत ज्यादा उधार आगया। उसकी दुकान भी बंद होगई पर उसे पता नहीं चला कि मुकेश की चाल का।

फिर बहुत कठिनाईयाँ करके भी वह उधार न चुका पाया हारकर उसे खेती करनी पड़ी

एक दिन वह सिढी पर चढ रहा था तो उसके बेटे ने कहा कि मैं जब आपके दोस्त मुकेश चाचा के घर से गुजर रहा था तो मैंने सुना कि उसने आपको धोखा दिया उस तरह से आपकी दुकान बंद होगी और तुम पर इतनी उधारी आ गयी। यह सुन कर वह सिढी पर से गिर गये उनके इलाज के लिए पैसे भी नहीं थे तो उनके सारे दोस्तों ने मदद की लेकिन मुकेश ने नहीं यह देख सुरेश समझ गया कि वह धोखेबाज है। तब से सुरेश ने मुकेश से दोस्ती तोड़दी। कुछ महीने बाद उसकी दुकान फिर चलने लगी और फिर से तरक्की करने लगी।

कहानी का भाव → जैसा करोगे वैसे भरोगे।

डटकर चल

Shashank Kumar- 8'Y'

कुछ करना है तो डटकर चल,
थोड़ा दुनियाँ से हटकर चल।
~~बाकि~~ रास्ते पर तो सभी चल लेते हैं,
कभी इतिहास को पलटकर चल।
बिना काम के दाम कैसा?
बिना मुकाम के आराम कैसा?
जब तक न हासिल हो मंज़िल,
तो राह में आराम कैसा?
कुछ करना है तो डटकर चल,
थोड़ा दुनियां से हटकर चल।

अर्जुन सा निशाना रख,
मन में न कोई बहाना रख,
लक्ष्य ~~अपना~~ सामने है अपना,
उसी पे बस अपना ठिकाना रख।
कुछ करना है तो डटकर चल,
थोड़ा दुनियाँ से हटकर चल।

सोच अपनी साकार कर,
बस अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल
किसी और का न इंतज़ार कर।
जो चले थे अकेले,
उनके पीछे आज भी मेले हैं।
जो करते रहे इंतज़ार,
उनके जीवन में आज भी झमेले हैं।
कुछ करना है तो डटकर चल।
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।

हमारा पर्यावरण

AROSHI KUMARI - 8' GAMMA

इस धरती पर रहने वाले हर एक मनुष्य को पर्यावरण का महत्व समझना होगा। एक समय की बात है, एक छोटे से गाँव मे राम नाम का बच्चा था। उसके माता-पिता एक हादसे मे मारे गए थे। वह अपनी छोटी बहन के साथ रहता था। वह 12 वर्ष का था। वह खुद पढ़ने न जाता, बल्कि अपनी बहन को सरकारी स्कूल भेजता। उसे अपना और अपनी बहन का ध्यान रखने के लिए जंगल मे जाके लकड़ी काट कर और बेचना पड़ता था। वह रोज 3-4 पेड़ों को काटता जिससे गाँव वाले परेशान हो गए थे। गाँव के लोगों को पेड़ों के छाया मे रहना बहुत था। गाँव के लोग हमेशा राम को बोलते की तुम यह काम मत करो इससे हमारे गाँव के सारे पेड़ कट जाएँगे और हमें छाया नहीं मिल पाएगी परंतु राम उन्हें बोलता की मालिक अगर, मैं यह काम छोड़ दूँगा तो, मैं अपनी बहन को पढ़ा न सकूँगा। कुछ ही समय बाद गाँव के लोग जंगल मे उससे मिलने गए और बोले अगर तुम कल से यह काम करना नहीं बंद करोगे तो हमलोग तुम्हारी शिकायत कर देंगे, पुलिस में। राम डर गया और उस रात उसी पेड़ के नीचे बैठा हुआ रो रहा था। तभी पेड़ मे से एक शक्ति बाहर आती है और बोलती है की क्या हुआ बच्चे? राम बोला "मुझे अपनी बहन को पढ़ाना परंतु मुझे सिर्फ पेड़ काटने आता है और कोई काम नहीं आता"। तुम ही बता दो, मैं क्या कर कर सकता हूँ। ठीक है, मैं तुम्हारी इच्छा समझ गई हूँ। यह कहते ही वह शक्ति गायब हो गई। अगले दिन राम उठा तो देखा की उसके घर के सामने एक छोटी सी दुकान खुली हुई है, कपड़ों की और अंदर कोई नहीं था। तभी वह सोचता है, और वह शक्ति फिर से प्रकट हुई और बोली की यह लो तुम्हारे

यह दुकान है। तुम अब पेड़ों को मत काटना। यह बोलते ही वह गायब हो गई। उसने दुकान को अच्छी तरह देखा और फिर वह खुशी-खुशी उस दुकान में काम करता। उसे यह काम लाभकारी लगने लगा फिर वह अपनी बहन को रोज स्कूल भी भेजता। उसकी बहन अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद तथा स्कूल से आने के बाद अपनी भाई की मदद करती। अंतः वह दोनों खुशी-खुशी रहने लगे। इस कहानी के माध्यम से यह बताया गया है की हमें अपने पर्यायवरण को बरबाद नहीं करना चाहिए और देख-रेख करना चाहिए। हमें हमेशा पेड़ों को कटने से बचाना चाहिए और ज्यादा से ज्यादा पेड़ों को लगाना चाहिए। हमें लोगों को जागरूक करना चाहिए पर्यायवरण बचाव के प्रति और देश को बताना चाहिए की "पेड़ है तो पर्यायवरण है और पर्यायवरण है तो हम लोग है।"

श्रवण कुमार की कहानी

Pallavi Kumari, VIII 'G'

यह कहानी एक ऐसे पुत्र की है जो अपने माता-पिता की सेवा मे ध्यान लगाकर रखता था। एक दिन उसने अपने माता-पिता को कवाड़ में बैठाकर तीर्थ यात्रा पर जा रहा और वह जंगल से गुजर रहा था, तभी उसके माता-पिता को प्यास लगी तो उसने अपने माता-पिता के लिए पानी लेने गया। उसी समय राजा दशरत जंगल में शिकार कर रहे थे। जब वह अपना बर्तन नदी में पानी के लिए डाला तब राजा दशरथ ने तीर चला दी उन्हें लगा की वहाँ कोई जंगली जानवर है लेकिन वहाँ श्रवण कुमार थे। वह तीर श्रवण कुमार को लगी तब वह दर्द के मारे चीख उठे तब राजा दशरत यह आवाज सुनकर वहाँ आए तब वह देखे की उन्होंने एक निर्दोष व्यक्ति को मार डाला। श्रवण कुमार राजा दशरथ को अपनी व्यथा कह सुनाई। और उसने कहा कि मेरे माता-पिता को यह संदेश दे दे।

जब राजा दशरत उसके माता-पिता यह संदेश दिए तो उसके माता-पिता उन्हें श्राप दिया और कहा जैसे मैं अपने बेटे के वियोग में रो रहा हूँ.

वैसे ही तुम रोगें, तभी तो राजा दशरथ के बेटे राम को वनवास हुआ तब वह देख न सकें और उनकी मृत्यु हो जाती हैं।

शिक्षा ⇒ हमें अपने माता-पिता को मरते-दम तक नहीं भूलना चाहिए क्योंकि वह हमें जन्म देखकर इतना बड़ा किया है। और हमेशा माता-पिता की सेवा करनी चाहिए।

अनोखी मित्रता

रिधिमा सिंह - 8 'ज'

कैसी अनोखी है ये मित्रता!?,
एक साल साथ, फिर अलग हुए हम।
छट्टी कक्षा में मिले, धीरे-धीरे-पास आए हम।
अंजान रहे इस बात से कि कब हम बन गए, दोस्त से बहने।
कैसी अनोखी है ये मित्रता!?

कैसी अनोखी है ये मित्रता!?
अब हुए एक साल साथ -साथ पर अब भी लगता की, कल की ही
तो बात थी। कैसी अनोखी है ये मित्रता!?

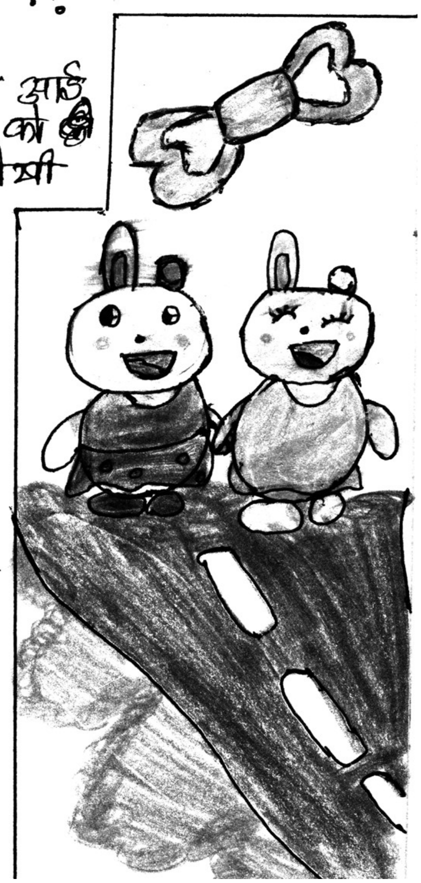

कैसी अनोखी है ये मित्रता!?
अब आई घड़ी सातवीं कक्षा की; के अब आई
घड़ी सातवीं कक्षा की, और... किस्मत को ही
तो देख। कर दिया हमें अलग। कैसी अनोखी
है ये मित्रता।

कैसी अनोखी है ये मित्रता!?
एक साल साथ रहे, फिर हुए अलग;
पर थे एक ही जगह। (x2)
पर अब हैं मिलों दूर।
कैसी अनोखी है ये मित्रता!?
कैसी अनोखी है ये मित्रता!?
के दूर हो के भी, इतना लड़
के भी साथ हैं हम। (x2)
कैसी अनोखी है ये मित्रता!?

कैसी अनोखी है ये मित्रता!?
अब भी साथ हैं, और मनाती
हूँ जिंदगी भर साथ रहें!!
के कैसी अनोखी है ये मित्रता!?

क्रिकेट्र कि जिंदगी

Sarthak Dixit-9A

एक क्रिकेट्र की जिंदगी बहुत मेहनत और
परिश्रम करने से ~~मिलति~~ मिलती है।
और क्रिकेट ही एक ऐसा ~~गेम~~ खेल
है जिसे पूरी दुनिया देखती है। और
इस खेल में कुल ग्यारह पेलयर खेलते
हैं। क्रिकेटर बनने और बोलने में
बहुत अंतर है। क्योंकि ये एक ऐसा
खेल है जिसके लिए बच्चे दिन रात
~~ग्याउंड~~ ग्राउंड में प्रेकटिस कर रही रहे हैं।
लेकिन तबभी सफल नहीं हो पा रहे।
क्रिकेट्र ~~कि~~ की जिंदगी जीना कोई आम बात
नहीं है इस खेल मे हासील करने के
लिए बहुत कठीन परिश्रम करना पड़ता है।
जैसे कुछ क्रिकेट्र का नाम :- सच विराट
कोहली, धोनी और भी बहुत सारे।
और ये एक ऐसा खेल है जिसमें टीम
स्पीरीट ना हो तो आप कभी खेल नहीं
जित सकते। बड़े - बड़े ~~प्लेयर~~ पलेयर
उतनी मेहनत करने के बाद भी आउट
हो जाते हैं। क्रिकेट्र कि ~~जिंदि~~ जिंदगी
जिना कोई आम बात नहीं है। सुबह
जल्दी उठना पूरी रुटीन मेनटेन करना।
~~आज मैं कुछ क्रिकेट्र के जिंदगी के
बारे में क~~ एक क्रिकेटर बनने के लिए
पढ़ाई से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती
है।

खरगोश का बच्चा

MD. Farhan Raza-IX Alpha

एक समय कि बात है, अनिकेत नाम का एक छोटा व्यापारी, एक जंगल से गुजर रहा था और अपने घर की ओर जा रहा था, उसने लग-भग आधे से ज्यादा जंगल की दूरी तह करली थी।

कुछ और कदम आगे चलते ही उसे झाड़ी में से किसी जानवर की चिल्लाने की आवाज़ आरही थी, पास जाकर देखा तो उसमे एक सफेद खरगोश का बच्चा रोता हुआ नज़र आया। उस खरगोश के बच्चे की माँ वहीं, अपनी प्राण त्यागी, घायल व्यवस्था मे थी, उस व्यक्ती ने उन पर ज्यादा ध्यान ना दे कर आगे की ओर दो-चार कदम आगे बढ़ाय, फिर वह वहीं रूका और सोचने लगा की अगर मैं उसे ऐसे ही हाल मे छोड़ दिया तो उसे कोई जानवर आकर खा जायगा, यह बाते सोचते उसने अपने कदमों को पीछे लिए उस अनाथ खरगोश के बच्चे को अपना लिया और उसकी मृत्यु दिन तक उसका ख्याल रखा।

समय का महत्व

राजवत - 9A

एक लड़का जिसका नाम राज था वह समय पर कभी कहीं नहीं पहुँचता था। वह समय के महत्व को नहीं समझता, और यह बचपन से उसकी आदत थी, इस आदत से सब परेशान रहते थे, वह कभी विद्यालय समय पर नहीं पहुँचता और न विद्यालय से घर समय पर पहुँचता, फिर वह 25 साल का हुआ वह अपने घर से दूर चला गया नौकरी करने। एक दिन उसे अपने भाई का फोन आया और उन्होंने बताया की पिताजी बहुत बिमार है, तुम यहाँ आ जाओ, उसने ~~जल्दी~~ जल्दी से ~~अगली~~ अगले दिन की ~~ट्रेन~~ ट्रेन का टिकट लिया। वह अगली सुबह

लेट से उठा और जल्दी से स्टेशन
के लिया निकला जब वह वहाँ पहुँचा
तो ट्रेन निकल चुकी थी वह पाँच मिनट
से लेट हो गया, उसने जल्दी से जाकर
अगली ट्रेन की टिकट ली जो 2 घंटे
बाद की थी इस बार वह स्टेशन पर
बैठा रहा कुछ समय बाद ट्रेन
आई और वह अपने घर के लिए निकल
गया, जब वह अपने घर पहुँचा तो उसे
पता चले के उसके पिता अब नहीं रहे वह
फिर लेट हो गया।

नए स्कूल का पहला दिन

विकेश कुमार - 9'A'

यह कहानी गोवा के एक छोटी सी गाँव में रहने वाला अमित की है। वह पहले जिस स्कूल में पढ़ता था वह किसी कारण बंद हो गई। उसके पिता का नाम राजू है, जो अपने जमीन पर तरह-तरह के फल-सब्जीयाँ उगाते हैं और बाजार में बेच आते, उसकी माता का नाम श्री है जो घर के काम करती है। जब से अमित का स्कूल बंद हुआ है, तब से उसके परिवार में रोज बहुत देर तक सोच विचार होता है कि अब अमित कहाँ पढ़ेगा क्योंकि अब उसके गाँव में कोई स्कूल ना था। थोड़ा घुमने के बाद पता चला की पास के गाँव में एक नया स्कूल खुला है।

अमित के पिता ने उसका दाखिला उस स्कूल में करवा दिया। तो आज है उसके नए स्कूल का पहला दिन वह बहुत खुश था क्योंकि वह नए स्कूल में पहले दिन अपने मन पसंद के व्यंजण ले कर जा रहा था। उसके मन यह बात घुम रही थी कि उसका स्कूल कैसा हो गा, उसके शिक्षक कैसे होंगे और सबसे अहम बात होगी की उसका कोई दोस्त बनेगा या

नहीं। फिर भी वह
उत्सुकता से स्कूल पहुँच गया।
वह सबसे पहले अपनी कक्षा में पहुँचा
वह सब बच्चों से
जाकर बारी-बारी मिला और सब
से दोस्ती भी की और घर आकर
अपने माता-पिता को भी बताया
की सब बताया।

पटना ज़ू की कहानी

भावेश कुमार - 9 'A'

वह दिन आ ही गया जिस दिन हम पटना ज़ू की सैर पर गए थें। वह दिन बहुत ही मनमोहक और रोमांच से भरा था। वहाँ के सारे ~~जानकर~~ जानवर आकर्षित थें। वहाँ एक झील भी है, जहाँ बोट चलती है। वहाँ एक कैफेटेरिया भी है। मुझे वहाँ का सबसे अच्छा जगह मछली घर लगा वहाँ अनेकों तरह-तरह की मछलियाँ थी। मैं वहाँ पीकोक (मोर) को भी देखा जो पेड़ पर चढ़कर नाच रही थी। मेरा उस दिन मन बहुत खुश हुआ। मैं अपने साथ एक दोस्त भी लाया था जो मेरे साथ घूम रहा था। वहाँ पर अनेक जानवर थे, जैसे- बंदर, लंगूर, लकड़बघा, सियार, मगरमच्छ, काला हाथी जिराफ, हिप्पो आदि। मुझे सबसे अच्छा बंदर लगा क्योंकि वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक कूद रहा था। मैं अब सारी जगह घूम लिया, लेकिन वहाँ कि सबसे सुंदर बगीचे, जिसमें अनेकों पेड़ पौधे लगें थे। वहाँ बुजुर्गों के लिए रिक्सा भी चलती है तथा वहाँ बच्चों का पार्क भी है। मेरी इतनी ही सफर थी, लेकिन बहुत रोमांचक और मनमोहक थी।

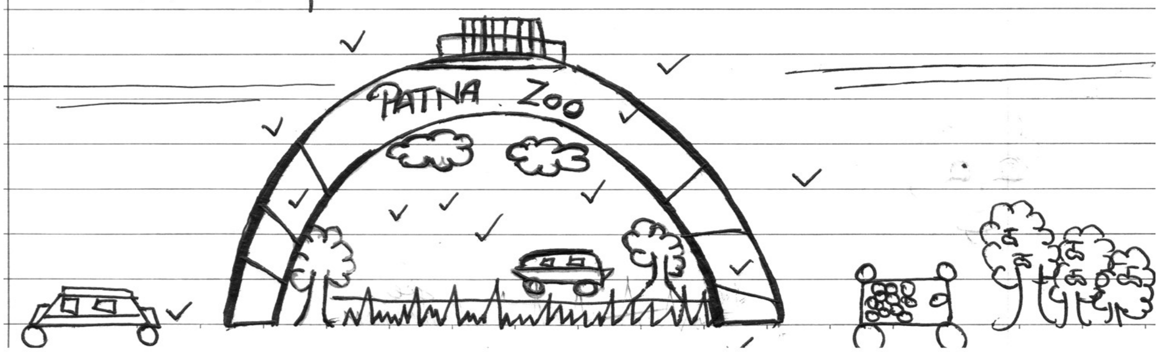

जल का महत्व

देवांशु कुमार, 9 'ब'

पानी जल का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। इसके बिना हम जीवित नहीं रह सकते। इसके बिना अनाज भी नहीं हो उग सकता क्योंकि बीज बोने के बाद बीज को उगाने के लिए भी पानी जल की आवश्यकता है। जल के अनेक रूप हैं - जैसे : समुद्र, नदी, तालाब। इन सब जगह हजारों जल पशु जीवित नहीं रह सकते। जंगल में रहने वाले पशु-पक्षी को भी जीवित रहने के लिए जल की आवश्यकता है। जल के चक्र को भी स्थिर रहने के लिए भी पानी का महत्व है। यह हमारे रोज की जरूरतें में शामिल है - जैसे खाना बनाने के लिए, नहाने के लिए, कपड़े धोने के लिए इत्यादि काम इससे पूरे होते हैं।

अर्थात : इसका यह मतलब है कि बिना जल के जीवन के बारे में सोच भी नहीं सकते हैं। इसलिए हमें इसमें गंदगी होने से रोकना होगा। इसका प्रयोग होने पर ही उपयोग करना चाहिए, इसको बर्बाद नहीं करना चाहिए। क्योंकि इस धरती पर पीने के पानी की मात्रा बहुत कम 0.03% है। ज्यादातर पानी बर्फ के रूप में ग्लेशियर में जमे हैं और समुद्र के खारे पानी में उपस्थित है।

इसलिए हमें इसकी महत्व को समझना चाहिए और इसका नियमित रूप से इस्तेमाल करना चाहिए।

लालच की सीख

आयशा

एक समय की बात है, ऐमबर्ग नाम के एक शहर में बहुत बड़ा व्यापारी रहता था। वह बहुत अमीर था, लेकिन उसमें ज़रा सा भी घमंड नहीं था। वह अक्सर व्यापार के कामों से अलग-अलग शहरों में जाया करता था। एक दिन वह मैलिबू शहर में अपने व्यापार किए हुए सौदे का मुनाफ़ा लेने गया। वहाँ वह अपनी कार से गया था। लेकिन उस शहर में सामाजिक उद्योग में बहुत अधिक कमी थी। वहाँ के रोड टूटे हुए थे, बहुत कम घर थे और कुछ भी सरकार द्वारा नहीं किया गया था। वहाँ भी एक अमीर व्यापारी था जो एक फैक्टरी निर्माण कर रहा था, उसे ही हैरी को पैसे देने थे। जब हैरी पैसे लेकर जा रहा तब रात हो गई थी। और अचानक बीच रास्ते में उसकी गाड़ी खराब हो गई। वहाँ सिर्फ़ एक घर था और पूरा जगह खाली पड़ा था।

हैरी ने उस घर में मदद माँगी और घरवालों ने उसकी मदद की। उस घर में केवल एक पति, उसकी पत्नी और उनका बेटा था। उन्होंने बहुत स्वादिष्ट

डिनर किया। उसके बाद हैरी को एक कमरा सोने के लिए दिया गया जिसमें हैरी के साथ उनका बेटा भी सोता। उस कमरे में एक पलंग था और फर्श पर चादर बिछी हुई थी। हैरी को बेड दिया गया और उनका बेटा नीचे सोया था। जब आधी रात हो गई तो उस लड़के के माता-पिता ने एक योजना बना रखी थी। वह धीरे-धीरे उस कमरे में गई और एक चाकू निकालकर सीधा बेड पर सोते हुए हैरी के अंदर डाल दिया और चादर हटाकर जमीन में छिपाने जाने वाले ही थे की दोनों की चीख निकल गई क्योंकि बेड पर उनका बेटा सो रहा था और हैरी नीचे फ़र्श पर था चीख़ से उसकी नींद खुल गई और दोनों को रोते देख और उनका बेटा बेड पर खून से लतपत मरा देखकर वह सब समझ गया और अपनी जान बचाकर वहाँ से निकल भागा। रात में फ़र्श पर नींद न आने की वजह से बेटा उठकर बेड पर चला गया था और हैरी की आँख खुली तो उसे लगा बेड पर सोना चाहता है इसी लिए वह खुद ही उठकर नीचे सो गया।
दोनों पति-पत्नि के लालच के कारण उन्होंने अपने ही बेटे को मार डाला। वह हैरी का सारा पैसा लेना चाहते थे।

मेरी सोच

श्रेया सिंह - IX अल्फा

मेरी सोच अर्थात कि मैं क्या सोचती हूँ। इन दिनों मैंने बहुत लोग एक ही काम या लक्ष्य सबका है। मैं कक्षा IX की छात्रा यही देखती हूँ कि या तो कोई आई. आई. टी. करता है या यूपीएससी, जैसे बड़ा और सम्मान वाला नौकरी हो ही नही सकता। पर मुझे इन सब कोई ~~रूची~~ रुची नही है; मैं ये नही कह रही हूँ कि यह अच्छा नौकरी नही है लेकिन दुनिया इससे कई ज़्यादा बड़ी है। मेरा सपना है कि मैं वैज्ञानिक (टेक्नोलोजी) बनु। मेरे पिता का कहना है कि तुम ~~एक~~ आईएस ~~कोई~~ क्यों नही बनना चाहती? तो मैंने कहा कि मैं आपसे बड़ा और कुछ अलग बनना चाहती हूँ क्योंकि जो काम हर लोग करे वह मजेदार नहीं होता यह मेरी सोच है। और अगर मैं वैज्ञानिक नही भी बन पाई तो वह जीवन की अंत या मेरी ~~क नही~~ हार नही होगी क्योंकि मैं जानती जो लक्ष्य मैं सोच लूँ उसमें, परिश्रम में कोई कसर नही छोड़ती तो मुझे इस बात का दुख ~~क~~ नहीं रहेगा कि मैं बिन कुछ किए हार गई। मेरे ~~4~~ एक

शिक्षक - ने मुझसे एक बार कहा कि बेटा ~~क~~ किसी परिस्थिती में भी तुम हार जाओ वह अंत नही होता बल्कि शुरुआत होती है कुछ और नया सीखने की उस हार से और करने की। यह सुन-कर मेरा तो यही मानना है जो सब करे या कहे वह मत करो क्योंकि अंत में वह आपका लाभ और हानि होगा जो कहा उसका नही और आप जो भी करो वह अंत नहीं होता, है जीवन मैंने बहुत से लोगों को देखा कि जब जिस लक्ष्य पर वह जाना चाहते है वह नहीं मिलता तो वो लोग निराश होकर हार जाते है और सोचते है अब क्या ही बचा है पर ऐसा नहीं होता है, हा! ~~क~~ पर मंजिल पर आगे बढ़ना कठिन होता है पर न होना उस रास्ता का असम्भव है। यही जीवन की सीख है यही मेरी सोच है।

एक अंजान बुढ़ा आदमी

दिव्या फैज़ खान - IX Alpha

एक समय की बात है। एक गाँव में राहुल नाम का बच्चा रहता था। एक शाम जब वह अपने बागिचे में घुम रहा था तो एक बुढ़ा आदमी उसके पास से मुस्कुरा कर गुज़रा ऐसा तीन-चार दिन चला और एक दिन वह आदमी उस बच्चे के पास आया और बोला कैसे हो बच्चे ? तब वह बच्चा कुछ समझ ना पाया कि वह आदमी उसके पास ही क्यों आया और वह उस बच्चे को देख कर मुस्कुरा क्यों उठता है। कुछ दिनों तक ऐसा ही चलते आया। वह लोग मिलते रहते। अक्सर शाम में उन दोनों की अच्छी बात-चीत शुरू हो गई। एक शाम वह बुढ़ा आदमी उस बच्चे से पुछता है कि अगर आज रात तुम्हें कोई काम ना हो तब अपने माता-पिता से पुछ कर क्या तुम मेरे घर आ सकते हो खाने पर? वह बच्चा जो कि अब उस बुढ़ा आदमी को जानता था और उससे रोज़ मिलकर बहुत बातें करता था। वह खुश होते हुए बोला क्यों नहीं मैं अपने

माता ने पीता से पुछकर आपके घर आज रात जरूर आऊंगा। रात को वह दोनो उस बुढे आदमी से उसके घर पर मिले वह आदमि राहुल को अपना पूरा घर दिखाया। और वहाँ एक कमरा था जिसमें कुछ लोगों कि तस्वीरें थी राहुल ने पुछा यह लोग कौन है तो उस आदमी ने जवाब दिया यह मेरे बहु बेटा और पोता है। मेरा पोता बिलकुल तुम्हारी तरह था और यह सब अब नहीं रहे यह लोग भगवान के पास चले गए है। यह बताते बताते बुढे आदमी के आँख में आँसु भर आया। राहुल उनका आँसु पोछते हुए बोला क्या हुआ अगर यह आपके साथ नहीं है, मैं तो हूँ ना। यह सबके बाद वे दोनो अकसर एक दूसरे के घर आते-जाते रहते और वह बुढा आदमी भी अब खुश रहने लगा था।

⇒ इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें दुसरों की भावों को समझना चाहिए और वह अगर खुश नहीं है और हम उन्हें खुश कर सकते हैं तो हमें उन्हें खुश रखना चाहिए।

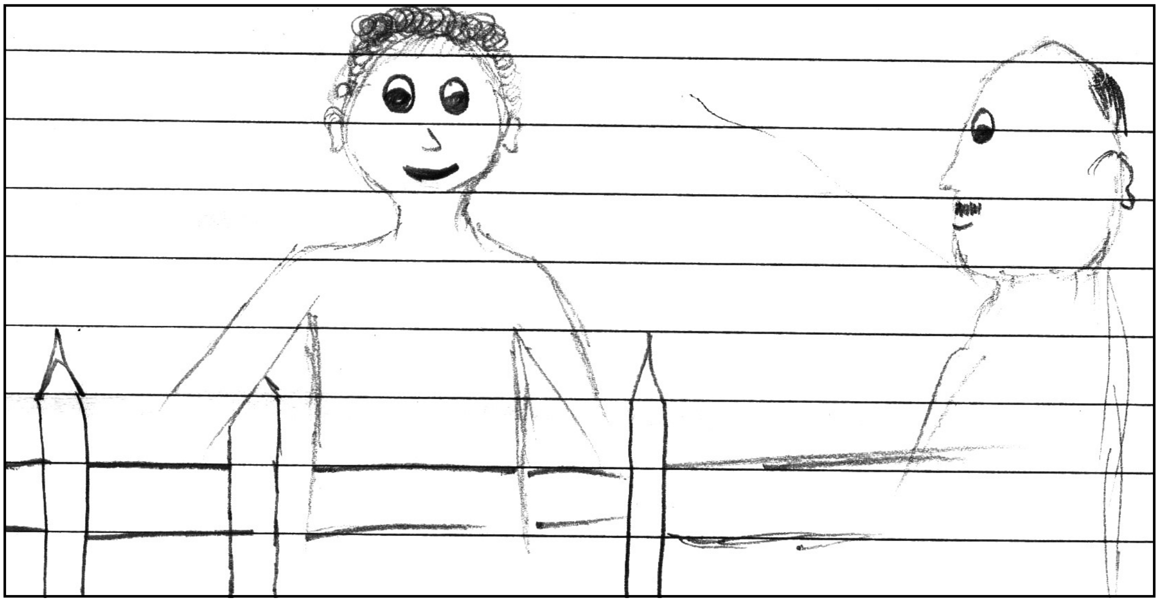

क्या सवी डॉक्टर बन पायेगी??

Aditi Anand - '9' Alpha

एक लड़की थी, उसका नाम सवी था वह पढ़ने में बहुत अच्छी थी। उसका बचपन एक सपना था बहुत अच्छी डॉक्टर बनने का। लेकिन उसका कक्षा 4 तक बहुत अच्छा अंक आता था परीक्षा में लेकिन कक्षा 5 से उसका अंक 70%, 80%, 75%... आने लगा। पास होते-होते वह कक्षा 8 में चली गई। उसने सोचा कि मैं दिल की डॉक्टर बनुगी। वह अपने मम्मी-पापा को बताई मम्मी-पापा मान भी गये। कक्षा 8 में उसका अंक अच्छा आया था। अब समय था सबसे कठीन कक्षा का "कक्षा 9"। सवी के रिश्तेदारों ने बोल कर उसका नाम एक कोचिंग में लिखवा दिया और वो पहले से भी एक ट्यूसन जारही थी। उसके पास समय नहीं रहता था कि वह अपने स्कूल का गृहकार्य कर सके। उसका कोई भी कार्य पुरा नहीं होता था। उसका समयसारिणी बहुत व्यस्त था। स्कूल से घर से कोचींग से घर 9 बजे पहुँचती थी कभी-कभी दस भी बज जाता था। सवी घर आती थी उसके दादा जी बोलने लगते पढ़ने बैठो, पढ़ो, सवी परेशान होगई थी।

उसके मन में कभी-कभी विचार आता था कि वह घर छोड़ कर चले जाएँ या आत्महत्या कर लें लेकिन जब भी वह ऐसा सोचती थी उसके सामने उसके मम्मी-पापा का चेहरा आ जाता था। सवी अपने मम्मी पापा कि एक-लौती बेटी थी इसलीए बिना कुछ कहे रोज़ ट्यूसन जाती थी। गुस्सा आता था, चिल्लाती थी, अपना गुस्सा भी उतारती थी, रोती थी मतलब सवी अपने ज़िंदगी से पूरी तरह परेशान हो गई थी।

क्या कभी सवी डॉक्टर बन पायेगी?

जीवन

Srishti Kumari, 9 'Alpha'

जीवन है कड़वा सच, है कठिनाई हर राह पर
लेकिन फिर भी जीना है।

निरंतर बहने वाली वह गंगा की धारा है।
कभी तो पत्थर आएँगे, कभी तो झरना
होगा।, अभी तो बहना पड़ेगा।

दुख तो हर मोड़ पर लेकिन जीवन को
रुकना कहाँ आता।

जीवन सबसे बड़ा गुरु, क्या नहीं सिखाता ये।
लोगों से नाते टूटे, सिखाया कोई अपना नहीं इस
जग में।
तुम अकेले हो कोई तुम्हारा अपना नहीं।

जीवन दुखों का सागर है, क्या ये दुख इतने
बड़े हैं।

पत्थर को भी कटना पड़ता है, हीरा बनने के लिए
दुखों को अपना साथी बनाओ, जीवन को
खुशहाल बनाओ।

प्रसन्न रहो चाहे समय हो कैसा, ~~दुख~~ जानो
कुछ रहता नहीं हमेशा, दुख आज है कल नहीं

जीयो तुम आज में भूल जाओ कल, कल
जीवन तो इसी का नाम है।

किसी पर हमें आँख बंद करके भरोसा नहीं करना चाहिए

अंकिता राज - IX 'अ'

किसी शहर में एक लड़की रहती थी उसका नाम एना था, एना ~~क~~ जब छोटी थी तब ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई थी, एना अब अपने ~~घ~~ बुड़े से घर में अकेले रहती थी एक दिन एना खिड़की पर बैठे किताब ~~पढ़~~ पढ़ रही थी कि अचानक उसके किताब पड़ एक ~~जो~~ छोटा सा ~~च~~ केचुआ का बच्चा ~~उसके~~ ~~कि~~ आ गया। ~~उ~~ उस केचुआ का रंग बहुत सुंदर था, एना ~~ने~~ उसे वहाँ से उठा कर अपने कमरे में ले गई। और उसें खाना खिलाया, ऐसा हर ~~न~~ दिन चलता रहा एना हर दिन उसे अपने साथ खाना खिलाती थी और उसके साथ खेलती थी, ~~अब~~ कुछ महिने बित गए अब एना बड़ी हो गई थी और वह केचुआ भी बड़ा हो गया, ~~और उ~~ वो एक दूसरे के अच्छे दोस्त बन गए थें और अब एना अपना सारा वक्त सिर्फ ~~केचुए~~ केचुआ के साथ ~~बिताती~~ रहती थी, उसके साथ खेलती थी, ~~उ~~ पढ़ती थी और खाना भी खाती थी, ~~अब दिर दिर~~ एक दिन एना ने देखा की उसके कमरे ~~में कुछ अवाजे~~ से कुछ ~~अवाजे~~ अवाजे आ रही थी। एना ने कमरे में जाकर देखा तो उसें केचुआ ने अपने जैसे एक छोटे के केचुआ को जन्म दिया है। धिरे-धिरे उस ~~केच~~ केचुआ का परिवार बढ़ने लगा और अब एना अपने घर में अकेली नहीं थी, उसके साथ केचुआ का पुरा परिवार था। ~~उसके~~ अब ~~के~~ केचुआ ~~पूरे~~ समय अपने परिवार के साथ रहता था। ~~धीरे-धीरे~~ एना और

केचुआ की दोस्ती खराब होने लगी, एक दिन एग्ना ने उसे खाना दिया और उसने खाना गिरा दिया और वहाँ से चली गई लेकिन एग्ना ने केचुआ ने खाना गिरा दिया और केचुआ अपने पुरे परिवार के साथ एग्ना के कमरे में चला गया एग्ना उसके पुरे परिवार को साथ देखकर डर गई, धिरे-धिरे केचुआ का परिवार उसके करीब आने लगा और उन सब ने मिलकर एग्ना को मार डाला।

दिखावटी दुनिया

आर्यन कुमार-9 (अलका)

रामपुर नाम के शहर में एक परीवार रहता था वह परिवार काफी खुशहाल और सुखी था। क्योंकि वह परिवार इस झूठी दुनिया की चका-चौंध से बचकर और अपने अंदर की खुबसूरती के साथ रहता था। वह परिवार कभी भी किसी के लिए बुरा नहीं सोचता था, ना ही बुरा करता था। उस परिवार में एक रोहन रहता था, वह पढ़ने में और अन्य कामों में, काफी अच्छा था। वह हमेशा अपने विद्यालय में प्रथम आता था। रोहन का सपना एक बहुत बड़ा और काफी अच्छा डॉक्टर बनने का था। रोहन जब 12 कक्षा में था जब उसका अपने देश के सबसे अच्छे मेडिकल कॉलेज में दाखिला हो गया था। रोहन इसके लिए काफी खुश था लेकिन उदास भी था क्योंकि वह कभी भी अपने परिवार से दुर नहीं रहा था। पर उसके माता-पिता ने समझाया और कॉलेज उसे भेज दिया। रोहन जब अपने कॉलेज पहुँचा वह काफी हैरान हुआ। कॉलेज काफी बड़ा था। और काफी सुंदर था। रोहन के उस कॉलेज में काफी दोस्त बने। लेकिन रोहन अब वो पहले वाला रोहन नहीं रह गया था। वह अपनी पढ़ाई से पुरी तरह दूर रहता दिन-दिन भर वो घुमता रहता अपने दोस्तों के साथ अवारा-गरदी करता रहता। पता नहीं कैसे रोहन बड़े शहर मे आकर उसकी चका-चौंध में खो गया। वह पहले वाला रोहन नहीं रह पाया जिसे बड़ा डॉक्टर बनना था।

जल्द ही रोहन की पहली साल की परीक्षा आ गई, रोहन पूरे साल कुछ नहीं पढ़ा था। और परिणाम भी यही आया। रोहन फेल हो गया था। रोहन ने जब इसपे सोचा तो उसे यह एहसास हो गया कि क्यों उसके माता-पिता इस दुनिया के चका-चौंध से दूर रखते हुए।

इस कहानी से हमें यह पता चलता है कि किस तरह एक छोटे शहर के बच्चे बड़े शहर के चका-चौंध में आकर खो जाते हैं। आज के समाज में ऐसे काफी बच्चे हैं जिन्हें कुछ करने कि इच्छा है लेकिन साधन ना होने के कारण वह उसे प्राप्त नहीं कर पाते हैं। और कुछ ऐसे भी बच्चे हैं जिनके पास सारे साधन हैं लेकिन उनके लिए उसका कुछ महत्व नहीं है, और इस दिखावटी दुनिया में खोए रहते हैं।

"भविष्य से आई लड़की"

Shamaellah Shamim - SAIPHA

एक बार कि बात है मैं अपने कमरे में बैठकर पढ़ाई कर रही थी तब ही मुझे अपनी बालकनी से एक आवाज़ आई, मैं थोड़ी देर के लिए रुकी पर फिर मुझे लगा की यह बस मेरा वहम है। मगर थोड़ी देर बाद दुबारा से वही आवाज़ आई, इस बार मैं घबरा गई। अचानक से मेरी बालकनी का दरवाज़ा खुला और उस दरवाज़े से मैं निकली। मैंने काफ़ी तेज़ चिल्लाया मगर घर में कोई नहीं था। जो लड़की उस दरवाज़े से आई थी वो बिलकुल मेरी तरह दिख रही थी मगर मुझसे थोड़ी बड़ी। मैं उसे देख कर आश्चर्यचकित रह गई, मैंने पूछा "कौन हो तुम? कहाँ से आई हो? जलदी बताओ वरना मैं पुलिस को कॉल कर दूँगी" अपनी घबराई हुई आवाज़ में।

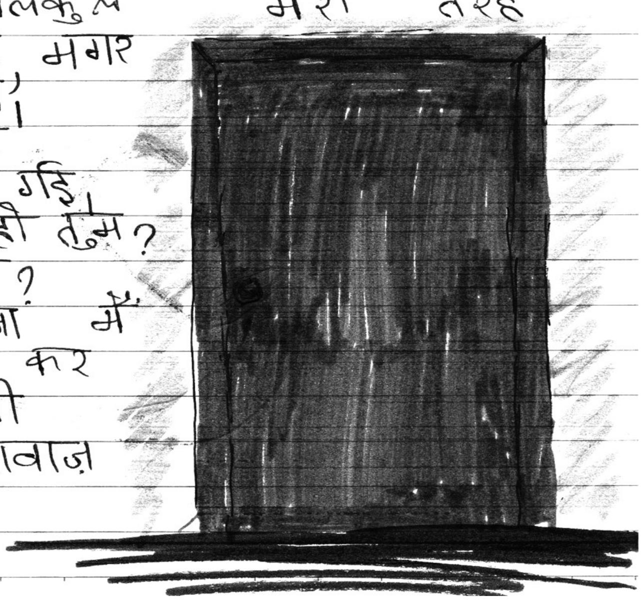

उसने जवाब दिया "अरे शांत शांत, मैं शमाएलाह हूँ और मैं भविष्य से आई हूँ", मैंने कहा "क्या?? ऐसा कैसे हो सकता है।

फिर उसने मुझे बताया की वो मुझसे दस साल बड़ी है और वो भविष्य से आई है, उन्होंने कहा की दस साल बाद तक हमारी दुनिया बहुत डेवलप कर चुकी है बहुत मॉडर्न है जहाँ इनसानों ने टाइम ट्रैवल को भी हासिल कर लिया है।

पहले तो मुझे उसकी बातों पर यकीन नहीं हुआ पर फिर उसने मुझे अपनी टाइम ट्रैवल घड़ी दिखाई और फिर मुझे धीरे - धीरे यकीन हो गया। हमने बहुत बातें की और फिर वो चली गई।

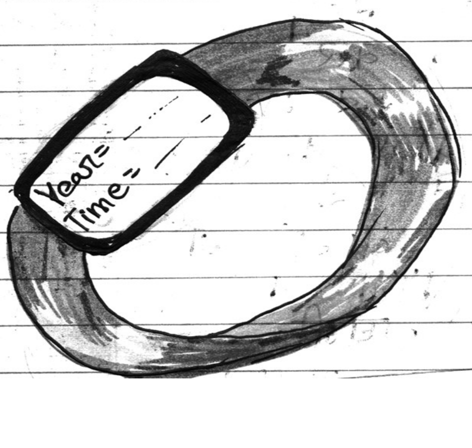

हीरे का हार

Hafeez Jamal, IX A

एक बार की बात है। जब एक लड़की, उसका नाम 'रायना' था। उसकी शादि कि बात हो रही थी। उसके 'माँ', 'बाप' ने एक लड़के जिसका नाम 'देव' था उससे रायना की शादि करा दी। रायना को खरीदारी करना बहुत पसंद था। रायना के पति देव लग-बघ 30,000 से 40,000 हज़ार तक कमाते थे।

देव एक कॅम्पनी में काम करता था। वहाँ के बोस की शादि होने वाली थी। जिसमें ऑफिस के सभी लोगों को आमंत्रित किया था। तो देव को भी उनके शादि में जाना था वो भी उसके परिवार के साथ।

देव की बीवी रायना उससे बहुत नराज़ रहती थी क्योंकि देव उसे खरीदारी के लिए पैसे नहीं दे पाता था परंतु देव ने उसे बचत करके उसे बहुत सारे कपड़े दिए थे।

देव उस दिन खुशी-खुशी घर आकर रायना को बताया की कल मेरे बोस की शादि है परंतु रायना ने कहा "क्या हो गया वह तो अमीर है तुम जैसा तो नहीं।" देव को यह बात अच्छी नहीं लगी परंतु उसने कहा की तुम्हें भी जाना होगा जो बात सुनकर रायना ने अपने कपड़ों के ढेर से अच्छी वाली सारी ढूँढ रही थी परंतु उसे कुछ पसंद नहीं आया।

वह चाहती थी की मुझे एक हीरे का हार चाहिए परंतु देव के पास उतने पैसे नहीं थे। तो वह अपनी एक दोस्त 'वैश्नवी' से उसने एक हीरे का हार माँगा तो उसकी दोस्त ने उसे 400-500 की नकली हीरे का हार दे दिया।

रायना खुशी-खुशी शादि में अच्छे कपड़े पहन हीरे का हार से चमक के कारण सभी आकर्षित हो रहे थे। वह बहुत खुबसुरत लग रही थी। जब वह दोनों घर लौट रहे थे तो रायना ने देखा की उसके गले से हीरे का हार गायब हो गया था। तो उन लोगों ने वापस जाकर हार को बहुत ढूँढा परंतु उन्हें ना मिला।

रायना फिर घर जाकर फूट-फूटकर रोने लगी की वह अब अपने दोस्त को क्या मूँह दिखाएगी। उसे वह असली हीरे का हार लग रहा था। तो उन्हों-ने बहुत मेहनत कर असली हीरे का हार खरीद के लिए मेहनत कर रही थी।

एक दिन उसकी दोस्त उसे मिल के कही की वह हार का क्या हुआ। तो उसने बोला की वह हार गिर कर हेरा गया था। तो उसे कहा के वह हार तो नकली थी।

तुम कब जाओगे अतिथि

Noya Imam, IX[th] Alpha

~~भोलू~~ एक लड़का जिस का नाम भोलू था। अपने दोस्तों के साथ खेले जब घर आया तब उसकी माँ उसे बताती है की कल महमान, अपने-अपने बच्चों के साथ आएगें। सुबह अगले दिन माँ और भोलू उनके घर की सफ़ाई करने लगे। माँ अच्छे-अच्छे भोजन बनाने लगी। तभी दरवाज़े की घंटी बजती है और महमान आ जाते हैं। भोलू उन के बच्चों के साथ खेलने लगा, और बड़े नाशता करने लगे, जो माँ ने उनके लिए बनाई थी। अगले दिन वह लोग गए नहीं, उन्हें कुछ दिन और रहने का मन था। वह पूरे घर को गंदा कर दिए थे, उनके बच्चों ने घर में भोलू के खिलौने हर तरफ़ फैला दिए। अब माँ और भोलू चाहते थे की अब वह यहा और दिन न रुके रुके। तभी बच्चे को याद आता है की उसके छुट्टिया खतम होने को आ गई है। तब वह सोचते है की अब उन्हें जाना चाहिए और अगले दिन सुबह में ही वह चले जाते हैं। तब माँ और भोलू राहत की सांस लेते हैं।

गूँज 'उठी वाद्ययंत्री की आवाज़

Rishav - IX A

यह कहानी मेरे जीवन के एक पल पर आधारित है। जब मैं सातवीं कक्षा में था तब मेरे शौक में एक विदेशी वाद्ययंत्र ~~मिटार~~ गिटार की रुची आयी मैंने अपने दोस्तों को यह बात बताई पर ' ~~कीसी~~ किसी ने भी उसपर गौर नहीं कीया किया। कुछ समय में ज़िद करकर पापा से गिटार खरिदवालीया और क्लास लेने चला गया कुछ महिने क्लास ' करकर मेरी रुची खत्म होने लगी और टाइम मैनेज न करने की वजह से मैंने गिटार सीखना छोड़ दिया और वह जिगर का टुकरा छह महिने से एक कोने में पड़ा हुआ था। कुछ समय बाद मेरे जीवन में एक विशेष मनुष्य की ईन्ट्री हुई। वह हमारे स्कूल के नए ~~म्युशिक म्युजिक~~ म्युजिक के शिक्षक थे। उनके पास वाद्ययंत्रों की बहुत ज्ञान है। मेरी मुलाकात उनसे म्युजिक के पीरियड में हुई, कुछ दिन उनसे बात - की विचार करने के ' बाद मेरे अंदर गिटार सिखने का जुनून फिर से आया मैं अपने गुरु शौक लेक सर शरण ' मैं गिटार सीखना शुरु किया और बस छह महिने में मैंने इतना सिख लिया था की मैं सही - गलत का भाव पहचान सकूँ। हमारे स्कूल में पहले एक दो ' बच्चे ही म्युज़िक में भाग लेते थे पर अब स्कूल में बैंड और कॉएर की 'कामैशन हुआ। अब हमारे स्कूल, स्कूल के बच्चे बड़ - बड़े स्टेजों पर पर्फोर्म करते हैं जैसे की सरस - मेला बिहार में वहाँ भरपूर - मात्रा में लोगी की संख्या थी। हमारे स्कूल की अब

म्युज़िक के लिए भी पहचाना जाता है।

मुझे मेरे गुरु से प्रेरणा और अनुभूती मिली की अगर हमारे अंदर जुनून है और एक शिक्षक जो हमें उचित ज्ञान दे और सही रास्ते पैर चलाएं तो हम अपने गोल तक आराम से जा सकते हैं।

संगत का असर

आलोक कुमार-9'बी'

एक समय की बात है। एक राहुल नाम का लड़का था। वह बहुत बदमाश था, वह बहुत शरारत करता था। स्कूल से भी उसकी बहुत सारी शिकायत आती थी और वह पढ़ने में भी कमजोर था। वह दिन भर अपना समय खेलने-कूदने और सोने में बरबाद करता। उसकी परीक्षा भी अगले महीने से शुरू होने वाली थी, और वह सोचता कि अभी तो परीक्षा में बहुत समय है। ऐसा करते-करते एक महीना बीत गया। परीक्षा का दिन आ गया, उसकी हर एक परीक्षा बहुत खराब जा रही थी, और उसको ~~समझ~~ समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करे। परिणाम का दिन आया वह फिर से फेल हो गया था। उसके माता-पिता ने गुस्से में आकर उसको बहुत मार और डाँट लगाई और उसको दूसरे स्कूल में डाल दिया। वह रोते-रोते अपने नए स्कूल के क्लास में जाकर सबसे पीछे वाली कुर्सी पर बैठ गया। ~~सब~~ वह हर दिन ऐसा ही करता। हमेशा पीछे जाकर बैठ जाता, एक बार एक रमेश नाम का लड़का उससे पूछता है क्या हुआ तुम इतने उदास क्यों रहते हो? उसने अपनी सारी कहानी बताई। राहुल को नहीं पता था कि रमेश पढ़ने में बहुत तेज है। ~~वह~~ रमेश और राहुल

बहुत अच्छे मित्र बन गए। फिर से दो महीने बाद परीक्षा आने वाली थी। ~~राहुल और रमेश ने इस बार साथ मिलकर~~ प परीक्षा के बाद टीचर ने कहा इस बार भी रमेश सारे विषय में प्रथम आया है। यह बात ~~सुन~~ सुनकर राहुल की आँखें खुल गई और उसने यह निश्चय किया की मैं अगले परीक्षा में अच्छे अंक लाऊँगा। इस राहुल ने रमेश से पूछा ~~म~~ तुम परीक्षा की तैयारी कैसे करते हो? रमेश ने कहा ~~मैं~~ ~~सिर्फ क्लास में~~। ~~जो~~ ~~टीच~~ मैं परीक्षा की तैयारी नहीं करता, जो टीचर पढ़ाते हैं बस उन्हें ध्यान पूर्वक सुनता और समझता हूं। ~~इस बात व~~ रमेश की बात पर राहुल चौंक गया, और वह भी क्लास में ध्यान देने लगा। अगली परीक्षा में उसने रमेश से ज्यादा अंक लाकर सभी को हैरान कर दिया। सभी ने राहुल की तारीफ की और उसके माता-पिता भी खुश हो गए।

सीख ≈ हमें अच्छे लोग के साथ रहना चाहिए।

समाज

अंजली शर्मा - IX (B)

लोग जहाँ पर बसते हैं,
समाज उन्ही से बनता है,
और कुछ लोग फिर वहीं से,
अपने सपने बुनते हैं।

कुछ लोग उन्हीं में से, अपना सपना,
अपने परिवार के सामने रखते हैं,
और कुछ लोग उन्हीं में से,
उस चाह को दबाये रखते हैं।
सपने

चाह तो पूरी होती नहीं,
दोनों में से किसी की भी,
और उनके परिवार उनपे,
अपने सपने थोपते हैं।

उत्तर में परिवार कहते हैं,
लोग क्या सोचेंगे सभी,
और, हमपर प्रतिबंध लगा देते हैं,
कह के, समाज का नियम यहीं।

जब वही बच्चे सभी,
बन पाते नहीं कुछ कभी,
तब वही समाज कहता है,
देखो पड़ा रहेगा घर पर, यह ऐसे ही।

उनकी क्या गलती थी,
यह मुझे समझ आती नहीं,
गलती तो उनकी थी जिसे,
कहते हम 'समाज' अभी।

सपनों की शक्ति

Nikhil Kumar - 9B

छोटा - सा बीज ज़मीन के नीचे,
एक दिन बनेगा वृक्ष सजीले।
अंधियारी रात भले ही गहरी,
सपनों की ज्योति कभी न ठहरी।

सपने लगें भले ही छोटे,
पर ले जाएँ मंज़िल बड़े और मोटे।
हिम्मत रखो, विश्वास जगाओ,
कदम बढ़ाकर राह बनाओ।

रास्ता चाहे लंबा, कठिन,
मन में हो तो सब है सरल।
हर सपना सच हो जाता है,
जो दिल से देखा जाता है।

माँ का प्यार

अक्षरम शर्मा, X 'C'

~~एक~~ कुछ समय पहले राजेश नाम का एक लड़का रहता था, उसकी माँ का नाम फूलन देवी था; राजेश के पिता का दो वर्ष पूर्व निधन हो गया था। उनकी आर्थीक स्तीथी कुछ ज्यादा अच्छी नहीं परंतु राजेश की माँ इतना कमा लेती जिससे राजेश स्कूल जा पाता और दो वक्त की रोटी ~~खानी~~ खाने को मिल जाती।

राजेश अपने जिला का सबसे सुदंर लड़का था, परंतु उसके माँ के पास एक आँख नहीं था। वह अपने दोस्तो घर नहीं बुलाता क्योंकी उसके दोस्त उस पर हँसते की अपने तो पूरे जिले मे सुदंर और उसकी माँ एक ही आँख है। यह सब सोचकर वह सोचने लगा की मेरी ही माँ इतनी बदसूरत क्यों है? वह समय-समय पर अपनी माँ को डाँटते रहता और उनकी बाते भी न मानता। एक दिन तो वह तंग ~~आकर~~ आकर घर से ही निकल जाता है।

पाँच साल बाद, जब ~~वह~~ राजेश अपने दोस्त से बात कर रहा होता है तो उसका दोस्त बोलता है, "पाँच साल बीत गए है, तुम अपने घर भी नहीं गए और तुम्हारी माँ कैसी है?"। राजेश बोला, "हाँ, बात तो तुम सही कह रहे हो, मुझे अपने घर चले जाना चाहिए और अपनी माँ से माफ़ी माँग लेनी चाहिए।"

राजेश अपने घर पहुँचता है, परंतु उस घर में अब कोई नहीं था। उसे वहाँ एक ख़त मिला, वह उसे खोला और पढ़ा,

ख़त में लिखा था;-

जब तक तुम यह ख़त पढ़ोगे, मैं इस दुनियाँ में नहीं रहूँगी। पर हाँ, तुम्हें मैं एक बात बताना चाहती हूँ:-

एक बार बचपन में तुम अपने दोस्तों के साथ खेल रहे थे, तब तुम ~~अपने~~ अपने आँख को खो दिये थे। सब तुम्हें, तुम्हारे आँख के कारण बहुत चीढ़ाते रहते हैं। तब मैंने तुम्हें अपना आँख का दान कर दिया, मैं आज बदसूरत क्योंकी तुम आज जिले में सबसे सुंदर हो। अब तो मैं इस दुनियाँ में नहीं पर मेरी छोटी-सी इच्छा है कि तुम मुझे याद जरूर रखना।

तुम्हारी बदसूरत माँ।

ज़िंदगी में ज़िंदा

Nilansh Arya, X 'A'

आज के समय में लोग काफी उलझे से हो चुके हैं। उनकी ज़िंदगी सिर्फ किसी एक कार्य करने में लग जाती है। उनके विचार, सोच, भाव तथा उनकी खुदकी अनोखी पहचान धुंधली होती जा रही है।

हमारे समाज ने हमपर इतने ताले लगा दिये हैं कि जब तक हमें समझ आए कि हम आज़ाद हैं हमने सारे तालों को खोल दिया है तब तक समय निकल चुका 'होता है और हम सिर्फ 'पछतावे' के साथ अपने अंत का इंतेज़ार करते हैं। गुणों की कोई कद्र नहीं करता मगर गुणवान व्यक्ति की तलाश सबको रहती है। आसमान को छूने वाली ऊँचाईयों जैसे विचार रखने वाले व्यक्ति को उड़ने नहीं कहा जाता।

हर इंसान खुदमें एक ब्रह्मांड है लेकिन वह देख सिर्फ उस ब्रह्मांड में बसे अंधेरे को पाता है।

इस 'ज़िंदगी में ज़िंदा' तो सब हैं लेकिन जीने के मतलब व और कारण किसी को नहीं पता। लोग खुद लक्ष्य बनाते हैं और उनके पीछे भागते हैं। हमारे बाह्य लक्ष्यों से हम इतने भटक चुके हैं कि अपनी आंत्रिक शांति को भूले जाते हैं।

"आखिर क्यों? हम बाहरी दुनिया और उनकी उम्मीदों के कारण खुदसे क्यों दूर हों?"

यहाँ किसी चीज़ का कोई अंत नहीं है नाही किसी की शुरुआत; लोगों की चाह हो या उम्मीदें दबाव या लालच। हम जिस दिन इन चंद सवालों के जवाब के थोड़े भी करीब आ गए हम 'ज़िंदगी' को समझ जाएँगे।

चोर ने चुराई ईमानदारी

Syed Alvan Faisal - X C

एक बार की बात है, एक चोर था हरी सिंह। यह उसका असली नाम तो नहीं था क्योंकि वह अपना नाम दूसरों से छिपने के लिए बदलता रहता था। उसका असली नाम तो किसी को नहीं पता। आज हरी शाम के समय एक गली से गुज़र रहा था। तब उसे एक पतला-दुबला सा परेशान व्यक्ति मिला। वह देखने से ज़्यादा पैसे वाला तो नहीं लग रहा था पर हरी ने उसका बटुआ चुराने की कोशिश और वह इसमें सफल रहा। उस बटुआ में एक सौ रुपये और एक आधार कार्ड भी था जिसपर अनिल यादव लिखा था। हरी ने अनिल के बटुए से सारे पैसे निकाल कर अनिल के पास गया और उसे वह बटुआ लौटा दिया। उसने कहा, "भाई! आपका पर्स नीचे गिर गया था, ये ले लीजिए।" अनिल ने हरी की ओर देखा और कहा, "तुम्हारा धन्यवाद। क्या कुछ खाओगे?" अनिल एक छोटा लेखक था, दिल से भी अच्छा था और कभी परेशान न होता था।" मेरे पास खाना खरीदने के पैसे नहीं हैं न मैं ज़्यादा पढ़ा लिखा हूँ। माँ बाप बचपन ही में छोड़ के चले गए, तब से यहाँ वहाँ खाने के लिए भटक कर अपना पेट भरता हूँ" हाँ यह बात सच है की यह कहानी सच नहीं है पर अनिल को हरी पर दया आई। उसने उससे पूछा कि क्या उसे खाना बनाने आता है? हरी ने सिर न में हिलाया। अनिल उसे अपने घर ले गया जो की बहुत छोटा था। अनिल ने हरी की जीवन बदल दिया। वह उसे पढ़ना लिखना एवं खाना बनाना

सिखाया बदले में वह उससे मार्केट से सामान मँगवाता एवं घर के काम में हाथ बटाने को कहता। अनिल को पता था की हर रोज़ हरी जब भी मार्केट से आता तब कुछ पैसे चुरा लेता लेकिन अनिल उससे कुछ न कहता। एक दिन अनिल को अपने महिने की पगार मिली, उसने वह अपने बिस्तर के नीचे रखी। उस रात, अनिल जब सो गया, तब हरी उसके बिस्तर के नीचे से उसके 150 रुपये चुरा लिए।

यह पैसे चुराने में उसे अच्छा तो नहीं लग रहा था पर उसकी मजबूरी थी। वह एक रेलगाड़ी से कहीं भाग जाने की सोच रहा था पर रास्ते में उसके मन में यह ख्याल आया की उसने बहुत चोरी की है अमीर लोग गुस्सा होंगे, बीच के लोग परेशान होंगे, गरीब लोग इस सच को मान लेंगे और आगे बढ़ जाएँगे पर अनिल मायूस हो जाएगा इस बात से नहीं की उसके पैसे चोरी हो गएँ पर इस भरोसे के टूटने से। उसनी हरी को घर की चाभीयाँ तक दी। अंत में उसे शर्म आई और वह वापिस आ गया। अगले दिन जब अनिल उठा तब हरी जा चुका था, उसके पैसे अपनी जगह पर थे और एक कागज़ के टुकड़े पर लिखा था "देखो, मैं लिखना सीख गया और रसोई घर में खाना भी है। सब कुछ के लिए शुक्रिया।"

क्रिकेट की शुरूआत

Mrigendra Kumar Singh-10 A

आज से करीब 150 साल ~~पहत~~ पहले लगभग सन् 1940 के आस पास अंग्रेजों ने एक खेल की खोज की जिसका नाम था क्रिकेट। उस समय तो लोगों को पता ही नहीं था कि इस खेल को कैसे खेला जाता है लेकिन आज के समय में यह दुनिया का दूसरा सबसे मशहूर खेल है। पहले तो इस खेल को अंग्रेज ही खेलते थे लेकिन जहाँ-जहाँ अंग्रेजों का राज था वहाँ-वहाँ इन लोगों ने इस खेल को पहुँचाया तब लोगों को पता चला कि क्रिकेट कैसे खेला जाता है। इस खेल का पहला इंटरनैशनल मैच इंगलैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेला गया था लॉर्ड्स के मैदान में जिसको क्रिकेट का घर भी बोला जाता है। पहले तो यह खेला ~~बिना~~ किसी ~~सुर~~ सुरक्षा के खेला जाता था लेकिन धीरे-धीरे लोगों की सुरक्षा का ध्यान रखते हुए ~~नए-नए~~ नई-नई खोज हुई। इस खेल का पहला विश्व कप 1975 में खेला गया था जिसमें वेस्ट इंडीज़ की जीत हुई थी। हमारे भारत ने अपना पहला विश्व कप 1983 में उठाया था। उस समय भारत के कप्तान थे कपिल देव। फिर दूसरी बार विश्व कप उठाया 2011 में जिसके कप्तान थे महेंद्र सिंह धोनी थे। जैसे-जैसे खेल आगे बढ़ता गया इसमें नए-नए आविष्कार हुए ताकि खेल को और सुरक्षित और मज़ेदार बनाया जा सके। क्रिकेट अभी सबसे सफल टीम है ऑस्ट्रेलिया, हमारा भारत दूसरे स्थान पर है। पहले ~~क्रिकेट~~ क्रिकेट के मैच 60 ओवर को होते थे लेकिन अब यह घट कर 10-20 ओवर हो गए हैं क्योंकि आज कल के लोगों के पास उतनी ताकत नहीं है कि वह 60 ओवर खेल पाए।

आज की दुनिया में क्रिकेट को बहुत पसंद किया जाता है, खासकर हमारे भारत देश में। हर आदमी को क्रिकेट पसंद है छोटा या बड़ा। मेरा भी यह सबसे पसंदीदा खेल है। क्रिकेट के खेल ने बहुत तरक्की की है और आगे भी करता रहेगा।

लालच क्यों करना ?

'Jiya Sinha, 10'∝'

एक छोटे से गाँव में मोहित नाम का लड़का रहता था। लोग उसे बहुत ही लालची कहा करते थे, क्योंकि वे बहुत ही लालच करता था। उसके स्कूल के सारे मित्र उस से बात नहीं करते थे। मोहित की लालच की वजह से वे बड़ा दुखी रहता था। एक बार तो वे बहुत ही बुरी तरह फँस गया था पर फिर कैसे भी गए के बच गया। जब मोहित गाँव के बड़े मैदान में खेलने के लिए गया तब उसके दोस्तो ने उसे वहाँ से जाने को कह दिया। मोहित को बहुत गुस्सा आया पर वे वहाँ से चला गया। जाते वक्त रास्ते में उसे उसका बहुत ही पुराना दोस्त मिला तो मोहित ने पूछा - "क्यो जतिन, कहाँ जा रहे हो ? बड़े दिनों के बाद मिले"। जतिन ने कहा - हाँ, मोहित मै अपने पिता जी के साथ दिल्ली गया था। और मैं अभी खेलने के लिए मैदान मे जा रहा हूँ। तुम कहाँ जा रहे हो ? और तुम भी क्यों नहीं चलते हमारे साथ खेलने ? इस बात से मोहित सोच मे पड गया और बोला - " ओ ! तो तुम दिल्ली गए थे ? तो क्या - क्या लाए हो वहा से ? क्या कुछ मेरे लिए है ? और मैं अभी मैदान से ही आ रहा हूँ और वहाँ कोई भी नहीं खेल रहा है, सब अपने - अपने

घर चले गए है"। इस बात पर जतिन चकित होकर बोला- "क्या ! तुम सच कह रहे हो, सब अपने घर चले गए है ?। मोहित बोला- हाँ, मै सच कह रहा हूँ, और मैं अभी वहीं से तो आ रहा हूँ। मैं तुमसे झूठ क्यों कहूँगा ?" जतिन ने कहा- ठीक है फीर तुम मेरे साथ मेरे घर चलो मैंने तुम्हारे लिए दिल्ली से उपहार लाया है"। मोहित ये बात सुन कर बहुत खुश हुआ जैसे की वह यह चाहता हो की जतिन खेलने न जाकर उसके साथ उसको अपने घर ले जाए और वह जो उपहार लाए है वो उसे दे दे। मोहित और जतिन घर पहुँचे और जतिन ने मोहित के हाथ में एक बहुत ही छोटा से तोफा लाकर रख दिया। मोहित ने देखा और पूछा - "तुम सिर्फ मेरे लिए ही तोफा लाए हो या और सभी के लिए भी। जतिन कहाँ - हाँ, मैं और सभी के लिए कुछ न कुछ लेकर ही आया हूँ। मोहित ये सब सुन ही रहा था की उसकी नजर एक बड़े और लम्बे से उपहार पर गई जो जतिन ने अच्छे से रखी हुई थी। मोहित से रहा नहीं गया और उसने बोला - "अरे! जतिन ये किसके लिए है? देखने से तो लगता है कि इसमे बैट है"। जतिन ने कहा - "हाँ, वे मैंने मोनू के लिए लिया था, वे कई दिनों से कह रहा था कि मुझे ये चाहिए तो मैंने उसके लिए ये उपहार के तौर पर लेने का सोचा"। मोहित की लालच बढ़ने लगी। उसने बीना सोचे कहा कि - "यार जतिन तुम बुरा मत मानना पर मुझे ये बैट बहुत अच्छी लग रही है, और मोनू के पास तो बैट पहले से ही है तो क्यों न तुम मुझे ये दे दो और उसे

मेरा उपहार दे दो ?"। जतिन सोच मे पड़ गया और सोचने लगा कि अब जब मोहित उसे इतने प्रेम से माँग रहा है तो उसे सच में उसकी जरूरत होगा। जतिन उसे वह दे देता है। मोहित वे बैट लेकर बहुत खुश हुआ। अगले दिन जब जतिन स्कूल गया तब उसे पता चला कि पिछले शाम वो जो मैच उसने मोहित के कहने पर छोड़ा था वे फाइनल मैच था जो जतिन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था क्योंकि वे इस दिन का बहुत दिनो से इंतजार कर रहा था। उस से जानने के बात मोहित पर बहुत गुस्सा आया। वे मोहित के पास गया और पूँछा -" मोहित, तुमने मुझ से झूठ क्यो कहा ? कल तो मैच था पर तुमने मुझसे झूठ कहा जिसके वजह से मैंने अपना फाइनल मैच छोड़ दिया। मोहित सोच में पड़ गया और रोने लगा उसे बहुत बुरा लग रहा था। वह उससे माँफी माँगना चाहता था।